

हिन्दुस्तान की अजीम तरीन पहली शख्सियत

हज़रत ताजुशरीअह की सवानए उम्मी

मुहम्मद अबदुर्रहीम खान कादरी जमदा शाही ज़िला बस्ती (यू पी )272002  
खतीब व इमाम जामा मस्जिद दमुआ ज़िला छिन्दवाड़ा (मध्य प्रदेश)480555  
मोबाइल नम्बर 7415066579

[khanjamdashahi@gmail.com](mailto:khanjamdashahi@gmail.com)  
[jamdashahi.blogspot.com](http://jamdashahi.blogspot.com)

हिन्दुस्तान की अजीम तरीन पहली शख्सियत  
हुजूर ताजुशरीअह की सवानए उम्मी

(1)मुहम्मद अख्तर रज़ा खां कादरी अज़हरी बिन(2) मुहम्मद इब्राहीम रज़ा खां कादरी जीलानी बिन(3) मुहम्मद हामिद रज़ा खां कादरी रज़वी बिन (4) इमाम अहमद रज़ा खां कादरी बरकाती बरैलवी रदियल्लाहु अन्हुम

(5)इब्न मौलाना नकी अली खॉ इब्न(6) मौलाना रज़ा अली इब्न (7)हाफिज़ काज़िम अली खॉ इब्न(8) हज़रत मुहम्मद अज़म खॉ इब्न(9) मुहम्मद सआदत यार खॉ इब्न(10) सईदुल्लाह खां रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन (10)सईदुल्लाह खॉ

नाबगए रोज़गार,खुलासए लैल व नहार,शाह मुल्क व सुखन,मरकज़ दायेरे इल्म व फन, इमामे अहले सुन्नत,अज़ीमुल बरकत,अश्शाह इमाम अहमद रज़ा हुजूर आला हज़रत की छट्टी पीढ़ी में हज़रत सईदुल्लाह खान हए हैं जो हिन्दुस्तानी जंग के बड़े शहसवार थे। आप को जंग में बड़ी महारते ताम्मा हासिल थी आप खानदाने मुग़िलया के बादशाह मुहम्मद शाह

(जो अपनी इशरत कोशियों की वजह से मुहम्मद शाह रंगीला कहलाता था) के दौर में मुल्के हिन्दुस्तान के दारुस्सलतनत देहली पर सन 1739 में “नादिर शाह दुर्रानी” ने हमला किया। आर उस के बाद क़त्ले आम किया – वह तारीखे हिन्द की बहुत बड़ी दर्द नाक और खूँचकां दास्तां है उसी नादिर शाही काफ़िलए में मुल्क अफ़ग़ानिस्तान के शहर कन्धार के मशहूर कबीला बड़हैच के एक पठान एक मर्द जीशान अज़ीम जर्नल हज़रत सईदुल्लाह खान भी शामिल थे। आप शहर लाहौर में वारिद हुए और शाह देहली ने उन की जवां मर्दी खानदानी जाहत व शुजाअत ज़ुरअत को देखते हुए हाथों हाथ लिया देहली आए तो बादशाह ने आप को छः हज़ार फौजियों का कमान्डर मुक़र्रर कर के सियादत के मन्सब पर फाईज़ किया और उन की अस्करी सलाहिय्यतों के मद्दे नज़र उन्हें शुजाअते जंग के ख़िताब से नवाज़ा गया

(9) हज़रत सआदत यार खॉ

आप हज़रत सईदुल्लाह खां साहब रहमतुल्लाहि अलैह के साहबज़ादे थे। और एक बड़े उहदे पर फाईज़ थे सल्तनत की तरफ से एक मुहिम सर करने के लिए बरैली रोहेल खन्ड भेजे गये फतेहयाबी पर उन को बरैली का सूबए दार बनाने के लिए फरमाने शाही आया लेकिन वह उस वक़्त आया जब बिस्तरे मिर्ग थे।

(8) हज़रत मुहम्मद अज़म खॉ

आप को भी दरबार में बा इज़्ज़त मुक़ाम और मनसबे वज़ारत हासिल थी लेकिन कुछ अर्से बाद आप का दिल दुनयवी करी फर से उचाट हो गया और आप ने सब कुछ तर्क (छोड़) कर के दुर्वेशी एख़्तियार करली। आप का विसाल बरैली ही में हुआ मुहल्ला बिहारीपूर मअमारान के क़ब्रस्तान में आप आसूदह हैं यानी आराम फरमारहे हैं। इस क़ब्रस्तान आप ही की वजह से शहज़ादे का तकिया पड़ गया।

(7)हाफिज़ काज़िम अली खॉ

आप हज़रत मुहम्मद अज़म खॉ के बड़े साहबज़ादे और जानशीन हैं आप शहर बदायूं के हाकिम थे। दो सौ सवारों की बटालियन आप के मुहाफिज़ दस्ते में शामिल थी आप को हज़रत मौलाना अन्वारुल हक़ साहब फरन्गी महली रहमतुल्लाह अलैह से बैअत व ख़िलाफत हासिल थी। हज़रत मौलाना अन्वारुल हक़ साहब फरन्गी महली रहमतुल्लाह अलैह हज़ूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा के मुर्शिदे तरीक़त हज़रत सय्यद आले रसूल अहमदी रदियल्लाहु अन्ह के उस्ताज़ थे।

(6) हज़रत कुव्वतुल वासिलीन इमामुल उलमा

मौलाना रज़ा अली खॉ रहमतुल्लाह अलैह

आप हज़रत हाफिज़ काज़िम अली खॉ रहमतुल्ला अलैह के फ़र्जन्दे अर्जुमन्द हैं आप की विलादत सन 1809 ईस्वी में बरैली में हुई आप इस खानदान के पहले शख्स हैं जो इल्मे दीन की दौलत लाए और खानदान में मुफ़्तियों का चिराग़ रोशन हुआ तो होता ही रहा। आप ही से हाकिमियत और शम्सीर व सनान के बजाए क़लम व किताब का दौर शरु हुआ (और गुमराह शुदह फिरके पर शेर खुदा और सैफुल्लाह की शमसीर बन कर बिजली की तरह चमका) 22 साल की उमर में आपने ख़लीलुर्रहमान टोंकी राजिस्थानी से जुम्ला उलूम व फुनून की तक्मील की। और शोहरए आफ़ाक़ होगये आप बा क़माल वलिये कामिल थे।

(5)मौलाना मुफ़ती नकी अली खॉ रहमतुल्लाह अलैह

फज़ाइले मआब,ताजुल औलिया,रईसुल फोज़ला,हामिए सुन्नत,माहिए बिदअत,बक़िय्यतुस्सलफ़,हुज्जतुल ख़लफ़,रदियल्लाहु तआला अन्ह जमादिल उख़रा रजब 1222 हिजरी को रौनक़ अफ़रोज़ दारे दुनया हुए आप ने अपने वालिद माजिद हज़रत आरिफ़े बिल्ला साहब क़मालात बाहेरा व करामाते ज़ाहिरा मौलाना रज़ा अली खान साहब से इक्तिसाबे उलूम फरमाया। बिहम्दिही तआला मनसब शरीफ़ का पाया ज़री अलिय्या को पहाँचा और उस का फायदा हमारे लिए यह हुआ कि आप अपने बाज़ए हिम्मत व तनतनए सूलत से इस शहर को फितनए मुख़ालिफीन से यक्सर पाक कर दिया।

### बैअत व खिलाफत

पन्जुम जमादिल उख़रा 1295 हिजरी को मारहरा मुतहहरा में सय्यदुल वासिलीन स न दुल कामिलीन सय्यदना आले रसूल अहमदी दस्ते अक्दस पर शर्फ़ बैअत हासिल की

### हज़ व ज़ियारत

29 शव्वाल 1295 हिजरी को बावजूदे शिदते अलालत, व कुव्वते जुअफ़, खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़री देने गये और वहां हज़रत सय्यद अहमद जैन दहलान शैखुल हरम वगैरह उलमाए मक्का मुअज़्ज़मा से मकर्रर सनदे हदीस हासिल फरमाई। जी कअदह बरोज़ जुमेरात वक्ते जुहर 1297 हिजरी को इक्कियावन 51 बरस पांच महीना की उमर में इस्हाले दमवी के मर्ज़ में शहादत पाकर शबे जुमा अपने वालिद माजिद साहब के किनारे में जगह पाई।

आप की शादी अस्फन्द यार बेग की बड़ी साहबज़ादी हुसैनी खानम से हुई आप की छः औलादें हुई (1)मौलाना अहमद रज़ा (2)मौलाना हसन रज़ा (3)मौलाना मुहम्मद रज़ा (4)हिजाब बेगम (5)अहमदी बेगम (6)मुहम्मदी बेगम

(4)आला हज़रत इमाम अहमदरज़ा

आपके पर दादा और पर नाना आला हज़रत मुजहिदे आज़म शैखुल इस्लाम वल मुस्लिमीन इमामा अहमद रज़ा खान कादरी बरकाती कुदिसा सिर्रहु हैं। जो 100 से ज़ाएद उलूम व फुनून के जामेअ और माहिर, एक हज़ार किताबों से ज़ाईद किताबें लिखीं और सच्चे आशिके रसूल, मोहसिने सुन्नियत, अलमबरदारे सुन्नियत, हैं आपकी तअरीफ व तौसीफ और कारनामों का ज़िकर करने के लिए एक दफ़्तर दरकार है।

आप के दो भाई हैं आप को ले कर तीन भाई हुए।

### आप की शादी:-

आला हज़रत की शादी 1291 हिजरी में अपज़ल हुसेन साहब की बड़ी साहबज़ादी " इरशाद बेगम " साहबा से हुई। शैख साहब मौसूफ शैख उस्मानी थे।

और आला हज़रत के दो साहबज़ादे आर पांच साहबज़ादियां हैं दोनों साहबज़ादों का ज़िकर उपर हो चुका है एक हुजूर ताजुशरीअह के दादा है और एक नाना है

साहबज़ादियों के नाम यह हैं। (1)बड़ी मुस्तफाई बेगम, इन की शादी आला हज़रत के भांजे जनाब हाजी शाहिद अली खान साहब से हुई, इन की सिर्फ एक लड़की हुई अजूबी बी, जो मोलवी सरदार खान साहब से मनसूब हुई यह साहबज़ादी आला हज़रत की हयात में फौत हो गई (2)कनीज़ हसन, जिन को मंज़ली बेगम कहते हैं इन की शादी जनाब हमीदुल्लाह खान साहब वल्द हाजी अहमदुल्लाह खान साहब रईसे शहर पुराना बरैली से हुई। इन की दो औलादें हुई अतीकुल्लाह खान साहब, और एक साहबज़ादी रफ़ात जहां बेगम

(3)कनीज़ हुसैन, जिन को संज़ली बेगम कहते हैं इन की शादी जनाब हकीम हुसैन रज़ा साहब इब्न मौलाना हसन रज़ा साहब से मनसूब हुई इन के तीन लड़के हुए (1)मूर्तज़ा रज़ा खॉ (2)मोलवी इदरीस रज़ा खान साहब (3)जरजीस खान साहब इमाम अहले सुन्नत के विसाल के 21 दिन बाद इनका विसाल हो गया (4)कनीज़ हस्नैन उर्फ छोटी बेगम, इन की शादी मौलाना हस्नैन रज़ा इब्न मौलाना उस्ताज़े ज़मन अल्लामा हसन रज़ा खॉ से हुई इन की सिर्फ एक लड़की हुई जो जरजीस मियां को मनसूब हुई (5)मूर्तज़ाई बेगम उर्फ छोटी बन्नो, इन की शादी मजीदुल्लाह खॉ साहब पिसरे खुर्द जनाब हाजी अहमदुल्लाह खान साहब रईसे शहर पुराना शहर बरैली से हुई। इन के तीन लड़के हुए और दो लड़कियां हुई (1)रईस मियां (2)रईस मियां (3)फरीद मियां (1)मुज्ताबाई बेगम (2)मुक्तादाई बेगम हैं।

(3)अल्लामा मुहम्मद हमिद रज़ा खान

आप के दादा हज़रत अल्लामा हुज्जतुल इस्लाम अल्लामा हामिद रज़ा खान माहे रबीउल अव्वल 1292 हिजरी मुताबिक 1875 में पैदाइश हुई आप आला हज़रत के जानशीन, दरजनों किताबों के मुसन्निफ और सैकड़ों के शैख व उस्ताज़ हैं। आप को ज़बान पर बड़ा उबूर हासिल था। बिलखुसूस अर्बी अदब में, आप का दौराने नमाज़े इशा आलमे तशहहुद में 17 जमादिल उला 1362 हिजरी मुताबिक 23 मई 1943 इस्वी में इन्तेक़ाल हुआ।

हजूर हुज्जतल इस्लाम के दो साहबजादे और चार साहबजादियां थी। आप की शादी फुफी जाद बहन कनीज़ आईशा हम्शीरह जनाब हाजी शाहिद अली खान साहब से हुई।

(1)साहबजादों के नाम यह हैं हज़रत मौलाना इब्राहीम रज़ा खान जीलानी मियां (जो हुजूर ताजुशरीअह के वालिद साहब हैं )

(2) हज़रत मौलाना हम्माद रज़ा खान नुअमानी मियां

(जो हुजूर ताजुशरीअह के चचा हैं )

चारों लड़कियों के नाम हैं (1)उम्मे कुलसूम जौज़ए हकीम हुसैन रज़ा खान,(2)कनीज़ सुगरा जौज़ए तक़दुस अली खां (3)राबिआ उर्फ़ नूरी,जौज़ए मशहूद अली खान साहब (4)सलमा बेगम जौज़ए मुशाहिद अली खान।आप के नाना हुजूर मुपितये आजमे हिन्द अल्लामा मुस्तफा रज़ा पैदाईश 1310 हिजरी मुताबिक 7/ जूलाई 1893 ईस्वी में हुआ आप आला हज़रत के शहजादए असगर(छोटे बेटे)और जानशीन हैं। लाखों के पीरे तरीक़त सैकड़ों उलमा व मशाईख़ के शैख़ व रहनुमा और दरजनों किताबों के मुसन्निफ़ हैं। फतावा नवेसी (फतवे लिखना)आप का तुराए इम्तेयाज़ रहा। मुपितये आजमे हिन्द मुपितये आजमे आलम, मुजद्दिद इब्न मुजद्दिद से मशहूर व मारुफ़ हैं कलिमा तय्यबा का विर्द फरमाते हुए विसाल हुआ 14 मुहर्रमुल हराम 1402 हिजरी मुताबिक 13 नवम्बर 1981 ईस्वी में आप का विसाल(इन्तेक़ाल हुआ)नमाज़े जनाज़ा इतनी भीड़ थी जिस का शुमार नहीं, अल गर्ज़ अख़बारी रिपोर्ट के मुताबिक़ मुत्तहदए हिन्द के किसी भी नमाज़े जनाज़ा में कहीं इतनी भीड़ न देखी गई। नमाज़े जनाज़ा उस्ताज़ल फ़ुक़हा जानशीने मुपितये आजम अल्लामा मुपिती अख़तर रज़ा साहब मद्दा ज़िल्लहुल आली ने पढ़ाई।आप के जनाज़े में तक़रीबन 25 लाख आदमी थे।

आप की शादी आप के छोटे चचा मौलाना मुहम्मद रज़ा खान साहब (जो आला हज़रत के छोटे भाई हैं)की अक्लौती साहबजादी से हुई।

आप के दस साहबजादियां हैं और एक साहबजादा (साहबजादे बचपन में फौत होगये थे )

नोट:- आप के दादा और नाना सगे भाई हैं

(2)आप के वालिदे मोहतरम हज़रत अल्लामा मुहम्मद इब्राहीम रज़ा ख़ाँ आप के वालिदे मोहतरम हज़रत अल्लामा मुहम्मद इब्राहीम रज़ा मुफ़र्रिसरे आजमे हिन्द,बड़े आलिम, बेहतरीन मुफ़र्रिसर अच्छे ख़तीब, शान्दार क़लमकार, लाजवाब मुसन्निफ़,। सन 1325 हिजरी मुताबिक़ 1902 में पैदा हुए। शान्दार अक़ीक़ा हुआ। और बेहतरीन तालीम व तर्बियत, 1344 हिजरी मुताबिक़ 1925 ईस्वी में दाउल उलूम मन्ज़रे इस्लाम से फारिग़ हुए। उसी दिन हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अल्लामा मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ रहमतुल्लाह अलैह ने नियाबत व ख़िलाफ़त अता फरमाई। सरकारे मुपितये आजमे हिन्द हज़रत अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ाँ की बड़ी साहबजादी से सरकारे आला हज़रत ने ब इजाज़त शाहजादगान अक़द(निकाह)फरमाया। पूरी ज़िन्दगी मस्लके आला हज़रत की नशरो अशाअत में गुज़ारी। मन्ज़रे इस्लाम में दर्स देते रहे। तबलीगी दौरे फरमाते किताबें लिखते आप माहनामा आला हज़रत के एडीटर भी रहे। 5 शहजादे 3/ साहबजादियां यादगार छोड़ीं 11 सफर 1385 हिजरी मुताबिक़ 12 जून 1965 ईस्वी बरोज़ शम्बा 60 साल की उमर में इन्तेक़ाल फरमा गये। नमाज़े जनाज़ा बहरुल उलूम अल्लामा सय्यद मुफ़ती मुहम्मद अफ़ज़ल हुसेन मुंगेरी बिहारी सुम्मा पाकिस्तानी ने पढ़ाई।

आप का मज़ार आला हज़रत के दाएं जानिब है।

आप के पांच साहबजादे और तीन साहबजादियां हैं। वही जो आप उपर जिक़ पढ़ चुके हैं जो ताजुशरीअह के भाई बहन हैं

(1)ताजुशरीअह

नाम:- आप का इस्मे ग्रामी " मुहम्मद इस्माईल रज़ा " जबकि उर्फ़ियत "अख़तर रज़ा"है आप अख़तर तख़ल्लुस इस्तेमाल फरमाते हैं आप के अलकाबात में ताजुशरीअह " जानशीने मुपितये आजम " शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन " ज़्यादा मशहूर हैं।

वलादत बा सआदत

हुजूर ताजुशरीअह दामत बरकातहुमुल आलिया की वलादत बा सआदत 24 ज़िल कअदा 1362 हिजरी / 23 नवम्बर 1943 ईस्वी बरोज़ मंगल हिन्दुस्तान के शहर बरैली शरीफ़ के मुहल्ला सौदा ग्रान में हुई।

आप का शिजरा नसब (शिजरए पिदरी)

मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ कादरी अज़हरी बिन मुहम्मद इब्राहीम रज़ा ख़ाँ कादरी जीलानी बिन मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ाँ कादरी रज़वी बिन इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ कादरी बरकाती बरैलवी रदियल्लाहु अन्हुम

इब्न मौलाना नकी अली ख़ाँ इब्न मौलाना रज़ा अली इब्न हाफ़िज़ काज़िम अली ख़ाँ इब्न हज़रत मुहम्मद अअज़म ख़ाँ इब्न मुहम्मद सआदत यार ख़ाँ इब्न सईदुल्लाह ख़ाँ

रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन

(शिजरए मादरी)

नाना की तरफ से शिजरा नसब यूं है।

अल्लामा अख्तर रज़ा बिन मखदूमा मअज़्ज़मा वलियए ज़ाहिदा शहज़ादीए हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म मुस्तफ़ा रज़ा ख़ां नूरी बरकाती रज़वी बिन इमाम अहमद रज़ा ख़ां कादरी बरकाती बरैलवी रदियल्लाहु अन्हुम

इब्न मौलाना नकी अली ख़ाँ इब्न मौलाना रज़ा अली इब्न हाफ़िज़ काज़िम अली ख़ाँ इब्न हज़रत मुहम्मद अज़म ख़ाँ इब्न मुहम्मद सआदत यार ख़ाँ इब्न सईदुल्लाह ख़ां रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन

आप के पांच भाई हैं और तीन बहनें हैं

आप के पांच भाई और तीन बहनें हैं। सब से बड़े भाई हैं 1:— रेहाने मिल्लत मौलाना रेहान रज़ा ख़ां कादरी रहमानी मियां

पैदाईश:—18 ज़िल हिज्जा सन 1353 हिजरी सन 1934 ईस्वी

विसाल:—18 रमज़ानुल मुबारक सन 1405 हिजरी सन 1985 ईस्वी

2:— और तन्वीर रज़ा कादरी (आप बचपन से ज़ब की कैफ़ियत में गर्क रहते थे बिलआख़िर मफ़क़ूदुलख़बर हो गये)

(3)तीसरे आप खुद हैं।हज़रत अल्लाम मौलाना अख़्तर रज़ा खान आप का ही लक़ब (हुज़ूर ताज़ुशरीअह)है।

और दो आप से छोटे भाई हैं

(4)डाक्टर कमर रज़ा ख़ां कादरी

और(5) मौलाना मन्नान रज़ा ख़ां कादरी

4विसाल:—शअबानुल मुअज़्ज़म 1433 हिजरी सुबह पांच बजे

1)बड़ी बहनों में पीली भीत में जनाब शौकत अली खान से बियाही गई थीं।

(2)दूसरी बहन बदायूं में शैख़ अब्दुल हसीब के निकाह में आई बिहमिदीही तआला यह दोनों साहबज़ादियों से लड़के व लड़कियां मौजूद हैं

(3)तीसरी बहन का अक़दे निकाह,खानदान ही में ही जनाब यूनुस रज़ा खानसाहब से हुआ जो ला वलद हैं।

अज़दुवाजी ज़िन्दगी :—

अक़द व मस्नून :— हुज़ूर ताज़ुशरीअह का अक़द मस्नून हकीमुल इस्लाम मौलाना हसनैन रज़ा इब्न मौलाना हसन रज़ा खान बरैलवी साहब की दुख़्तरे नेक अख़्तर और मौलाना तहसीन रज़ा खान व सिबतैन रज़ा खान व मुजीब रज़ा खान की नेक बहन के साथ 3 नवम्बर 1968 ईस्वी में शाबानुल मुअज़्ज़म 1388 हिजरी कांकर टोला पुराना शहर बरैली शरीफ में हुआ।

अब आप की औलादें:—

हुज़ूर ताज़ुशरीअह के एक साहबज़ादा और पांच साहबज़ादियों है और उनका तपसील वार जिक

(1)जानशीने ताज़ुशरीअह हज़रत अल्लमा मौलाना अस्जद रज़ा ख़ां की वलादत 14 शाबान 1390 हिजरी 1970 ईस्वी को मुहल्ला ख्वाजा कुतुब बरैली में हुई सरकारे मुफ़्तिये आज़म ने आप के मुंह लुआबे दहन डाल कर दाखिले सिलसिलए बरकातिया रज़विया फरमाया आप का पैदाइशी नाम मुहम्मद मुनव्वर रज़ा हामिद और उर्फ़ियत अस्जद रज़ा है आप ने इब्तेदाई कुतुब घर पर मुफ़्ती मुज़फ़्फ़र हुसेन रज़वी और मुफ़्ती नाज़िम अली कादरी से पढ़ीं। फिर ज़ामिया नूरिया रज़विया से इक़तेसाबे इल्म किया। दर्से निज़ामी की मुतदावेल कुतुब बुख़ारी शरीफ़ तिरमिज़ी शरीफ़ वग़ैरह हुज़ूर ताज़ुशरीअह से पढ़ीं वालिदे माजिद ने दो हज़ार दो में सनदे फरागत के साथ ही तमाम सलासिल की इज़ाज़त व ख़िलाफ़त व वज़ाइफ़ और आमाल व अशग़ाल में मुजावज़ व माज़ून फरमाया। इलावह अज़ीं आप को गुले गुलज़ारे बरकातियत हज़रत सय्यद अमीन मियां बरकाती सज्जादा नशीन मारहरा मुतहहरा से भी ख़िलाफ़त व इज़ाज़त हासिल है आप की शादी खाना आबादी पीरे तरीक़त रहबरे शरीअत हज़रत अल्लामा सिबतैन रज़ा साहब की साहबज़ादी मोहतरमा राशिदा नूरी साहबा से 2 शाबानुल मुअज़्ज़म 1411 हिजरी 17 फरवरी 1991 बरोज़ इतवार हुई आप की चार साहबज़ादियां 1, अरीज फातमा 2, इम्रह फातमा 3, मज़ीना फातमा 4, बुशरा फातमा और दो साहबज़ादे 5, हिसाम अहमद रज़ा और 6, हम्माम अहमद रज़ा हैं।

(1)बड़ी साहबज़ादी मोहतरमा आसिया बेगम आली जनाब इन्जीनियर मुहम्मद बुरहान रज़ा साहब देहली,को मन्सूब हैं।

एक साहबज़ादा मुहम्मद अलवान रज़ा और एक साहबज़ादी है।

(2)दूसरी साहबज़ादी सअदिया बेगम साहबा, आली जनाब अलहाज मुहम्मद मन्सूब अली खान (बहेड़ी) को मन्सूब हैं।

एक साहबज़ादी और एक साहबज़ादा मुहम्मद मिन्हाल रज़ा हैं।

(3)तीसरी साहबज़ादी मोहतरमा कुदसिया बेगम साहबा हज़रत मौलाना मुहम्मद शुएब रज़ा नईमी देहली साहब को मन्सूब हैं। एक साहबज़ादे मुहम्मद हमज़ह खुबेब हैं।



(4) साहबजादी मोहतरमा अतिया बेगम साहबा हज़रत मौलाना मुहम्मद सलमान रज़ा साहब इब्न अमीने शरीअत को मन्सूब हैं दो साहबजादे मुहम्मद सुफ़यान रज़ा मुहम्मद शाबान रज़ा हैं।

(5) पांचवी साहबजादी मोहतरमा सारिया बेगम, आली जनाब मुहम्मद फरहान रज़ा को मन्सूब हैं एक साहब जादी हैं।

हुज़ूर ताजुशरीअह के मामूलात:

आप अपने मामूलात के पाबन्द हैं। ज़ेल में हम रात व दिन किस तरह आप कामों में गुज़ारते हैं। सनीचर के दिन बाद नमाज़े फजर तिलावते कुरआन, वज़ाइफ, नाशता से फरागत के बाद किताबें सुनते हैं। या फतावा तहरीर फरमाते हैं। या तहरीर करवाते हैं। या फतावा सुन कर तस्दीक़ फरमाते हैं। दोपहर 1/ बजे तक डराईंग रुम में तशरीफ़ रखते हैं। तख़स्सुस फिल फिका के तलबा को ग्यारह या 12/ बजे के बाद दर्स देते हैं। खाना तनावुल फरमाकर क़ैलूला फरमाते हैं। बादे नमाज़े जुहर फिर किताबें सुनते या किताबें लिखवाते हैं। बादे नमाज़े असर दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ पढ़ते हैं। बादे नमाज़े मग़िब वज़ाईफ़ से फारिग़ हो कर फिर किताबें सुनना या किताबें लिखवाना फिर बादे नमाज़े ईशा खाना तनावुल फरमाते हैं। बादहु थोड़ी देर टहलते हैं। फिर किताबें सुनते हैं या लिखवाते हैं। 11, 12, बजे रात तक यह सिलसिला जारी रहता है। उसी दौरान मुलाक़ाती मुलाक़ात भी करते हैं मुरीद होने वाले दाखिले सिलसिला हाते हैं फिर हज़रत फजर में अगर फजर से पेशतर जागते हैं तो तहज्जुद पढ़ते हैं वरना नमाज़े फजर अदा फरमाने के बाद मामूलात हस्बे सुतूर बाला अन्जाम देते हैं। इतवार:— इस दिन बादे नमाज़े ईशा इन्टरनेट पर आन लाइन सवालात के जवाब देते हैं इंग्लिश का जवाब इंग्लिश में, अर्बी का अर्बी में, उर्दू का उर्दू में जवाब होता है। बकिया मामूलात हस्बे सनीचर।

पीर मंगल बुध यह दिन हस्बे सनीचर के जैसा।

जमेरात:— दोपहर में दौरए हदीस के तलबा को बुखरी शरीफ़ का दर्स देते हैं बाद नमाज़ मग़िब अज़हरी गेस्ट हाउस के हाल में अवामे अहले सुन्नत के सवालात का जवाब देते हैं। कुब 'व जवार के इलावह दूर दराज़ से लोग हज़रत की "महफिल सवाल व जवब" में हाज़िर होते हैं। बकिया मामूलात हस्बे हफ़ता।

जुमअ:—उस दिन देर से डराईंग रुम में तशरीफ़ लाते हैं, तक़रीबन दस या ग्यारह बजे आजाते हैं। मुलाक़ातियों से मुलाक़ात के बाद तहरीरी काम करवाते हैं। 1 बजे अन्दर तशरीफ़ ले जाते हैं। फिर जुमा के वक़्त तय्यार हो कर बाहर आते हैं। खुतबा देते हैं और नमाज़ पढ़ाते हैं। बादे नमाज़ मग़िब शहर के किसी मस्जिद में सवाल व जवाब का प्रोग्राम रखवा जाता है। वहां तशरीफ़ ले जाते हैं। फिर तशरीफ़ लाने के बाद बकिया मामूलात हस्बे साबिक़।

उस के इलावह किसी दिन किसी वक़्त नमाज़े जनाज़ा के लिए या तअज़ियत व इयादत के लिए तशरीफ़ या कुर्ब व जवार के प्रोग्राम में भी तशरीफ़ ले जाते हैं सफर व हज़र में हत्तल मक़दूर हुज़ूर मामूलात में फर्क़ नहीं आने देते — वह वक़्त जो इस्टेज या मुलाक़ात में सर्फ़ होता है। वह उस से मुस्तसना है।

अक़ीदते औलियाए किराम

अल्लाह वाले महबूबाने इलाही से बड़ी अक़ीदत व महबूबत रखते हैं, उनका अदब करते हैं उन की बारगाह में हाज़िरियां देते हैं उन के वसीले से दुआएं मांगते हैं उन की रविश को अपनाते हैं उन का ज़माने भर में खुतबा पढ़ते हैं उन के दर से वाबस्तगी दीन व दुनिया के लिए कामयाबी का ज़रिया समझते हैं, अर्ज़ एक अल्लाह वाले को अल्लाह वाले से बड़ी उन्सियत, अक़ीदत व महबूबत रहती है। हुज़ूर ताजुशरीअह मद्दा ज़िल्लहुल आली वली बिन वली बिन वली बिल वली हैं कि उन्हें देखने से खुदा याद आता है लिहाज़ा उन के अन्दर औलियाअल्लाह की अक़ीदत व महबूबत का हाना फितरी बात है। चुनान्चे आप ने मुतअदिद आलियाए किराम मशायिख़ इज़ाम, उलमाए ज़विल एहताराम, के मज़ारात पर हाज़री दी है। बरैली शरीफ़ में सिटी क़ब्रस्तान में आरम फरमा खानवादए रज़विय्या क अफराद बिलखुसूस इमामुल उलमा मौलाना रज़ा अली रईसुल मुतकल्लिमीन अल्लामा नकी अली, उस्ताज़े ज़मन अल्लामा हसन, दरगाहे आला हज़रत, दरगाह शाह दाना वली, दरगाह अल्लामा तहसीन रज़ा ख़ान अलैहिमुर्हमह में हाज़री दिया करते हैं। बदायूं में छोटे सरकार, बड़े सरकार, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के वालिद माजिद, मारहरा मुतहहरा में बुज़रुग़ानेदीन, सादाते किराम कालपी शरीफ़, सदरुशरीअह, हाफिज़ मिल्लत अलैहिमुर्हमह, बिलखुसूस ख्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी, मुहद्दिस दहलवी महक्क़ अब्दुल हक़, हज़रत निज़ामुद्दीन आलिया, बुज़रुग़ाने देहली बुज़रुग़ाने बम्बई, बुज़रुग़ाने अहमदाबाद, सय्यदना रिज़कुल्लाह शाह दाता, कोड़ी नार, अजमेर मुअल्ला में सरकार सुलतानुल हिन्द ग़रीब नवाज़ अलैहिर्हमह की बारगाहों में हाज़री दिया करते हैं।

आप ने पाकिस्तान, बुज़रुगाने मिस्र, दमिश्क जारडन , उर्दन इराक, बिलखुसूस सरकारें गौसे पाक, इमामे अजम, करबला शरीफ के इलावह मक्का मुअज्जमा व मदीना मुनव्वरा के बुज़रुगों की बार गाह में हाज़री दी है।

हज व ज़ियारत

हर मोमिन बिलखुसूस आशिके सादिक की तमन्ना होती है। कि हरमैन शरीफैन की ज़ियारत से खुद को मुशरफ करें। अल्लाह तआला ने सरकार ताजुशरीअह मद्दा ज़िल्लहुल आली को इस तमगे से भी खूब नवाज़ा है। आप ने छः हज किये हैं। पहला हज 1403 हिजरी मुताबिक 4 / सितम्बर सन 1983 इस्वी , दोसरा हज 1405 हिजरी मुताबिक सन 1986 इस्वी , तीसरा हज सन 1406 हिजरी मुताबिक सन 1987 इस्वी चौथा हज 1429 हिजरी मुताबिक 2008 इस्वी , पांचवां हज 1430 हिजरी मुताबिक 2009 इस्वी, छठा हज 1431 हिजरी मुताबिक 2010 इस्वी में किया, उस के इलावह अनगिन्त बार आप ने उमरह किया और मदीना मुनव्वरा की हाज़री दी,

ताजुशरीअह हुज़र अज़हरी मिय्यां की तालीम व तर्बियत:—

वालिद माजिद ने रुहानी व जिस्मानी, ज़ाहरी व बातनी हर तरह की तरबियत फरमाई और शानदार तर्बियत का इन्तेज़ाम फरमाया , बड़े नाज़ व पिअम से पाला और तमाम ज़रूरतों को पूरा फरमाया। जब आप चार साल चार माह चार दिन के हुए तो तस्मियह ख्वानी (बिस्मिल्लाह)का वालिद माजिद ने एहतमाम किया , दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम के तलबा व मुदर्रिसीन की दअवत फरमाई, अज़ीज व अकारिब व मुअज्जिज़ीने शहर का भी मदउ फरमाया, हज़रत मफस्सिरे अजमे हिन्द ने अपने खुस्रे मोहतरम व चचा जान जानशीने आला हज़रत हुज़र मुपितये अजम की बारगाह में अरीज़ह पेश किया कि “अख़्तर मियां ” की तस्मिया ख्वानी की तकरीब है। हुज़ूर शिरकत फरमायें और तस्मिया ख्वानी भी करवाएं , चुनान्चे हज़ूर मुपितये आजम कुदिसा सिरहु ने तस्मिया ख्वानी करवाई आपने वालिदा माजदा से नाज़रा किया और इब्तेदाई कुतुब खुद मुफस्सिरे आजम ने पढ़ाई उस क बाद दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम में दाखला करादिया । मेहनत व लगन के साथ मुव्वजह दर्से निज़ामी की तकमील यहीं की । आप को शरु ही से मुतालआ का बे हद शाक रहा , इमाम इल्मो फन हज़रत ख्वाजा मुज़पफर हुसैन शैखुल हदीस दारुल उलूम चिरह फैजाबाद फरमाते हैं।

हज़रत अज़हरी मियां को मैं ने तालिब इल्मी के ज़माने मे देखा मुतालआ के बे हद शौकीन हत्ता कि कभी कभार मस्जिद मे आता तो देखता है कि रास्ता चलते जहां मौका मिला किताब खोल कर पढ़ने लगते हैं ।

लोगों के असरार पर आप 1963 ईस्वी में मशहूर यूनियर्सिटी जामियातुल अज़हर, काहरा मिस्र ज़बान व अदब पर महारत हासिल करने के लिए तशरीफ ले गये, कुल्लिया उसूलुद्दीन में दाखला लिया और दीन के उसूल कुरआन व अहादीस पर रिसर्च फरमाया और अर्बी अदब को मज़बूत किया मगर हुज़ूर ताजुशरीअह मद्दाज़िल्लहुल आली से इस्तेफ़सार पर मालूम हआ कि आप मिस्र जाना नहीं चाहते थे बल्कि सरकार मुपितये आजम हिन्द कुदिसा सिरहु की बारगाह ही में रहना चाहते थे, चुनान्चे कभी कभार फरमाते हैं।

जो इल्मी व अदबी फायदा हज़रत (मुपितये आजम)के पास रह कर हुआ वह मिस्र में नहीं हुआ वह तीन साल भी काश हज़रत की खिदमत में ही गुज़रा होता” फिर फरमाते हैं मुपितये आजमे हिन्द का इल्म बड़ा मज़बूत था। हुज़ूर मुपितये आजम कुदिसा सिरहु की तजर इल्मी का तज़किरा हज़रत काज़िये मिल्लत भी अकसर किया करते थे।

सन 1386 हिजरी 1966 इस्वी में कुल्लिया उसूलुद्दीन कसमुत्तफ़सीर वल हदीस की तकमील फरमाई इस शोअबे में आप ने अव्वल पौज़ीशन हासिल की— सालाना इम्तेहान में मअलूमाते आम्मा का इम्तेहान तकरीरी हुआ था जिस में मुम्तहिन ने मअलूमात ने इल्मे से मुतअल्लिक सवाल किया इस में आप के हम सबक तलबा जवाब न दे सके , मुम्तहिन ने सवाल दोहरा कर आप की तरफ देखा और जवाब तलब किया फिर आप ने इस का शानदार जवाब दिया, मुम्तहिन ने पूछा आप शोअबा तफ़सीर व हदीस के मुतअल्लिम हैं फिर भी इल्मे कलाम में यह गहराई ? तब हज़रत ने फरमाया कि मैं ने “दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम” मे इल्मे कलाम पढ़ा है। इस से वह बहोत खुश हुए और आप को हम सबक तलबा में सब से ज़ियादा नम्बर दिया ।

रिज़ल्ट के बाद आप को अव्वल नम्बर पर आने की वजह से मिस्त्र के सदर कर्नल जमाल अब्दुन्नासिर साहब ने बतौर तमगा (तुक) पेश किया और B.A. की सनद भी अता की, जब आप बरैली जंक्शन उतरे, नअरहाए तकबीर व रिसालत से फज़ा गोंज उठी। ख़ानवादए रज़विया के अफराद और शहर के मुअज़्ज़िज़ीन इस्तेक़बाल करते हुए दरगाह शरीफ तक लाए।

दर्स व तदरीस:— जब आप जामिया तुल अज़हर मिस्त्र से तशरीफ लाये तो मन्ज़रे इस्लाम में मुदर्रिस मुकर्रिर हुए, यअनी आप ने 1967 ईस्वी से तदरीस का बाज़ाब्ता आगाज़ फरमाया मुसलसल जद्दो जहद और मेहनत व लगन से पढ़ाते रहे यहां तक कि 1978 ईस्वी में आप सदरुल मुदर्रिसीन के उहदे पर फायज़ हुए।

मन्ज़रे इस्लाम का दारुल इफ्ता भी आप के सुपुर्द हो गया, तकरीबन 1980 ईस्वी में आप कसीर मसरुफियत की वजह से मन्ज़रे इस्लाम से इलाहदगी हो गये। कि यह वह दौर है जिस में सरकारें मुफ्तिये आज़म बीमार चल रहे थे। इस वजह से तबलीगी दौरे वगैरह भी दरपेश हो गये। सरकार मुफ्तिये आज़मे हिन्द का विसाल 1981 ईस्वी में होगया उस के बाद आप की मसरुफियात और बढ़ गई, फतावा नवेसी में आप मुरज्जअ ठेहरे इस वजह से आप ने “मरकज़ी दारुल इफ्ता” कायम फरमाया जो ता हुनूज़ बहुस्न व खूबी अपनी मन्ज़िल की तरफ रवां दवां है। मगर आप ने दर्स व तदरीस, तसनीफ व तालीफ, तअरीब व तर्जुमा का काम मुतअस्सिर न होने दिया ता हुनूज़ आप का दर्स जारी है और फतावा नवेसी के इलावह तसनीफी काम भी शबाब पर है।

इरादत व सुलूक बैअत व ख़िलाफत

बचपन ही में सरकार मुफ्तिये आज़म हिन्द ने मुरीद कर लिया था, इस तरह ज़ाहरी व बातनी दोनों उलूम का आगाज़ सरकार मुफ्तिये आज़म के फ़ैज़ तर्जुमान से हुआ, मुरव्वजह उलूम व फुनून की तकमील के बअद 1371 हिजरी मुताबिक 15 जनवरी 1962 ईस्वी में महफिले मीलादुन्नबी (सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम)की पुर नूर तकरीब में अकाबिर उलमा की मौजूदगी में इज़ाज़त व ख़िलाफत से सरफराज़ फरमाया, बुरहाने मिल्लत मुफ्ती बुरहानुल हक रज़वी जबलपूर, शम्सुल उलमा काज़ी शम्सुद्दीन अहमद रज़वी जअफरी जौनपर अलैहिर्रहमह के इलावह बहोत से हज़रात उल्मा व मुअज़्ज़िज़ीने शहर मौजूद थे, ख़लीफए आला हज़रत हज़रत बुरहान मिल्लत मुफ्ती बुरहानुल हक जबलपूरी

सय्यदुल उलमा हज़रत सय्यद आले मुस्तफा बरकाती सज्जादा नशीन ख़ानकाहे मारहरा मुतहहरा शरीफ से भी इज़ाज़त व ख़िलाफत हासिल है। वालिद माजिद सरकार मुफर्रिसरे आज़मे हिन्द ने मरव्वजह उलूम व फुनून की फरागत से पहले ही अपनी अलालत की वजह से अपना कायम मुक़ाम यअनी जानशीन बनादिया और जमीअ सलासिल (हर सिललसिले)इज़ाज़त व ख़िलाफत भी अता फरमादी, । ताजुशशरीअह

हिन्दुस्तान की पहली अजीम तरीन बा वकार शख्सियत नबीरए आला हज़रत जानशीने मुफ्तिये आज़म

ताजुशशरीअह हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान कादरी अज़हरी दामत बरकातहुमुलआलिया की शख्सियत और उन की इल्मी व फक़ही ख़िदमात व कारनामों और रुहानी सिलसिलए कादिरिया बरकातिया रज़विय्या के हवाले से एक्तेसाबे फ़ैज़ करने वाली उम्मत मुस्लिमा के बारे में कुछ कहने या लिखने की ज़रूरत नहीं है बल्कि मौजूदह वक़्त में यह सब अज़हर मिनशशम्स (सूरज की तरह ज़ाहिर है) है।

बैनुल अक.वामी पैमाने पर यह ख़बर इन्टरनेट पर नश्र हुई कि रायल इस्लामिक इस्टेडीज़ सेन्टर, तैब्द अम्मान की तय्यार करदह दुनिया की पांच सौ मुअस्सिर बा वकार अजीम तरीन शख्सियत की ताज़ह लिस्ट जारी हुई है जिस में ताजुशशरीअह हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान कादरी अज़हरी दामत बरकातहुमुलआलिया को दुनिया की 26 वीं औ हिन्दुस्तान की पहली मज़हबी मुअस्सिर बा वकार अजीम तरीन शख्सियत तस्लीम किया है। यह ख़बर इस्लामियाने हिन्द और बिल खुसूस सिलसिलए कादिरिया बरकातिया रज़विय्या के लिए बड़ी फरहत बरख़ा है। आज के इत्तेलाआती व मुवासिलाती दौर में इस रुह अफ़ज़ा ख़बर ने आनन फानन सरहदी दीवारों के कैद व बन्द को चीरते हुए पूरे आलमे इस्लाम में खुशी की लहर दौड़ा दी। हर चहार जानिब हज़रत ताजुशशरीअह की दराज़िए उमर सिहत व सलामती, दीनी व फक़ही ख़िदमात व असरात और सिलसिला के फरोग के लिए दुआओं की मज्लिसें मुअक़िद होगईं। बारगाहे इलाही में उठे लाखों हाथों ने हज़रत के लिए दुआ की।

उसी सरवे में रिपोर्ट में Top -50 मज़हबी रहनुमाओं में हिन्दुस्तान से सिर्फ़ तीन शख्सिय्यात का इन्तेखाब किया गया है। जिन में 26 वी नम्बर पर पहला हिन्दुस्तानी नाम हज़रत ताजुशशरीअह का है। रायल इस्लामिक इस्टेडीज़ सेन्टर



(RISSC) अम्मान के चीफ डायरेक्टर डाक्टर जोज़फ और एडीटर डाक्टर आरिफ अली (जारडन,अम्मान)ने अपनी रिपोर्ट में तहरीर किया है। कि ताजुशरीअह हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान कादरी अज़हरी हिन्दुस्तान के मुफ़्तिये आज़म और सुन्नी हन्फी बरकाती बरैलवी रहनुमा व कायद हैं। दुनिया में बीस लाख बरकाती बरैलवी मुसलमान आप के मरीद हैं। सब का बुनयादी अक़ीदा सुन्नी हन्फी सुफी है।

मज़ीद लिखते हैं कि आप ऐसे माहौल में रुहानी व मज़हबी ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं जहां दहशत गर्दी और अफरा तफरी का माहौल है, पूरा इलाका दहशत गरदाना तहरीकात से मुतअस्सिर है, इन इलाकों में और यह ख़ारदार माहौल में सूफिये अज़ीम की तब्लीग़ व नशर व अशाअत खास्सा मुशकिल मरहला है। जहां एक तरफ फितनए व फसाद की लहर चल रही है तो दूसरी तरफ आप शमए राहे हिदायत लिए अम्ने आलम की मशअल जला रहे हैं।

तसनीफ व तानीफ में दो दरजन स जायद अंग्रेजी और अर्बी किताबे लिखीं हज़ारों फतवे तहरीर किये 2000 ईस्वी में मरकजुदरासातिल इस्लामिया जामियतुर्ज़ा के नाम से बरैली शरीफ में एक अज़ीम इस्लामी दरस्गाह कायम की। आप ने 52 से ज़ियादा मुल्कों का तबलीगी सफर करके सवादे आज़म अहले सुन्नत का पैग़ाम पहोंचाया, बिल खुसूस अरब दुनिया के उलमा व फोज़ला और शूयूख़ ने स नदे अहादीस की इजाज़तें तलब कीं और तिलामज़ह (शागिर्द-चेला)के सफ में दाख़िल हुए। वाज़ेह रहे कि हज़रत दामत बरकातहुमुल आलिया को फ़िका इस्लामी की खिदमात पर जामिया अज़हर यूनियर्सिटी काहरा मिस्त्र की इन्तेज़ामिया ने फखरे अज़हर एवार्ड से नवाज़ा था। एक अन्दाज़े क मुताबिक़ सैकड़ों तिलामिज़ह और दो करोड़ 20000000 के करीब आप के मुरीदीन की तादाद है। आप शरीअते इस्लामिया के सख़्त पाबन्द और आमिल हैं। राएल इस्लामिक स्टेडीज़ सेन्टर की वेब साइट के पून्तपेबण्वउ पर जहां दूसरे लोगों के फोटू लगाए गए हैं वहीं हज़रत के फतवे व तक़वे का लिहाज़ पास कर के फोटू से इज्तेनाब किया गया है हज़रत के तअल्लुक़ से दी गई तफसीलात में फोटू न लगा कर डायरेक्टर ने क़ाबिले तअरीफ काम किया है। अल्लाह तआला हज़रत को उम्मे ख़िज़्र अता फरमाए। आमीन

हज़रत के मदरसे के वेब साइट का पता

[www.jamiaturraza.com/live](http://www.jamiaturraza.com/live)

जामियातुर्ज़ा साइट पर ही आप ऑन लाईन सवालों के जवाब इतवार के दिन शाम को 9,से 10 के बीच दिया करते हैं।

[www.hazrat.org](http://www.hazrat.org)

आला हज़रत के बारे में उर्दू इंगलिश ज़बान में तफसीली मालूमात है

[www.ala-hzrat.com](http://www.ala-hzrat.com)

इस साइट पर उर्स का ऑडियो प्रोग्राम लोड है पूरउपजनतत्रण्वउ

[www.Ahlesunnat.net](http://www.Ahlesunnat.net) [www.aalaahazarat.com](http://www.aalaahazarat.com)

[www.tajushshariya.com](http://www.tajushshariya.com) [www.alahazratnetwork.com](http://www.alahazratnetwork.com)

[www.sunniawaz.com](http://www.sunniawaz.com)

तन्ज़ीम व तहरीक से वाबस्तगी:

आप सुन्नी जमीअतुल उलमा के सदर हैं,इमाम अहमद रज़ा के अहम ट्रैस्टी हैं “ आल इन्डिया जमाअते रज़ाए मुस्तफ़ा” (कायम आला हज़रत) के सर परस्त हैं उस के इलावह अरब व अजम में मु त अद्विद तन्ज़ीमें, तहरीकें हैं जो मस्लके आला हज़रत की तरवीज व इशाअत में कोशां हैं उन की सर परस्ती फरमाते हैं।

ताजुशरीअह ब हैसियते बानी

(1)मरकज़ी दारुल इफ़ता अ (2)मरकज़ी दारुल क़ज़ाअ

(3) शरई इसलामी कौन्सिल आफ इन्डिया (4) मरकजुदरासातुल इस्लामिया जामियतुर्ज़ा (5) अज़हरी मेहमान खाना (6) अज़हरी गैस्ट हाउस म मज़कूरह बाला इदारे बहुस्न व खुबी अपनी खिदमात अन्जाम दे रहे हैं, दारुल इफ़ता से फतावा काफी तअदाद में सादिर किए जाते हैं, अहले सुन्नत वल जमाअत में इस दारुल इफ़ताअ की बड़ी अहमियत है, कोहनए मशक़ मूपती, माहिरे जुज़अिय्यात, उस्ताजुल फ़ोक़हा हज़रतुल अल्लाम काज़ी महम्मद अब्दुरहीम सन 1983 ईस्वी से ता हयात यहीं रहे उन के फतावा का अहम ज़ख़ीरह मौजूद है।

मरकज़ी दारुल क़ज़ाअ में रविय्यते हलाल,(चांद कमेटी)मुक़द्दमे वगैरह के फैसले होते हैं। शरई कौन्सिल ऑफ़ इन्डिया के तहत 21 जदीद उनवानात पर सिमीनार हो चुके हैं, जामियतुर्ज़ा में 55 इस्टाफ व मुलाज़िमीन का अम्ला काम कर रहा है, 660 तलबा फिलहाल ज़ेरे तअलीम हैं हिफज़ व क़िरात, दर्से

पर मुश्तमिल निसाबे तअलीम है। दीनी व दुनियावी दोनों शुउर का तलबा यहां हुसूल करते हैं। जायरीन को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था इस वजह से हज़रत ने उन के लिए क़्याम का इन्तेज़ाम फरमाया, हज़रत ने पूरा काशनए आला हज़रत जो गैरों के पास चला गया था हासिल कर के उस पर जदीद तअमीर करवाई, और मुस्तक़बिल क़रीब में जामियतुर्ज़ा के ग्राउन्ड में “हामिदी मस्जिद” दअवते नज़्ज़ारह देगी इनशाअल्लाह

फतवा नवेसी

1816 इस्वी में रोहील्ला हुकूमत के खात्मा, बरैली शरीफ पर अंग्रेज़ों के कब्ज़ा और हज़रत मुफ्ती मुहम्मद उयूज़ साहब के रोहेलख़न्ड(बरैली) टोंक तशरीफ लाने के बाद बरैली की मसनदे इफ़ता ख़ाली थी। ऐसे नाजुक और पुर आशोब दौर में इमामुल उलमाअ अल्लामा मुफ्ती रज़ा ख़ान नक्श बन्दी साहब ने बरैली की मसनद इफ़ता को रौनक बख़्शी ख़ानवादए रज़विय्या मे फतवा नवेसी की अज़ीमुश्शान रिवायत की इब्तेदा हुई।

लेकिन मजमूअए फतवा बरैली शरीफ में आप की फतवा नवेसी की इब्तेदा 1831 इस्वी लिखी है। ( ग़ालिबन दरमियानी अरसा अंग्रेज़ क़ाबिज़ों की रेशा दवानियों के सबब ख़ाली रही)

अल्हम्दुलिल्लाह! सन 1831 इस्वी से आज 2014 यह सिलसिला जारी वसारी है। यअनी ख़ानवादए रज़विय्या में फतवा नवेसी की फतवा नवेसी की ईमान अपरोज़ रिवायत 180 साल से मुसलसल चली आरही है। इमामुल फ़ोकहा, हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद रज़ा अली ख़ाँ कादरी बरैलवी, इमामुल मु त कल्लिमीन, हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद नकी अली ख़ाँ कादरी बरकाती, आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद रज़ा ख़ाँ कादरी बरकाती, जमालुल अनाम, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ाँ कादरी बरकाती, शहज़ादए आला हज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत, मुफ़्तये अज़मे हिन्द, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ कादरी नूरी, नबीरए आला हज़रत, मुफ़स्सिरे अज़मे हिन्द, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद इब्राहीम रज़ा ख़ाँ कादरी रज़वी, (रदियल्लाहु अन्हुम)

और अब उन के बाद क़ाजियुल क़ज़ात फिलहिन्द, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ कादरी अज़हरी दाम हिल्लहु अलना 1967 इस्वी से अब तक तक्रीबन 49 साल से इस ख़िदमत को बहुस्न व खूबी सरे अन्जाम दे रहे हैं।

वअज़ व तक्रीर

वालिद माजिद हुज़ूर ताजुशशरीअह मुफ़स्सिरे अज़मे हिन्द अल्लामा मुफ्ती इब्राहीम रज़ा ख़ान जीलानी रदियल्लाह अन्ह को कुदरत ने ज़ोरे खिताबत वबयान वाफर मिक्दार में अता फरमादिया था। हुज़ूर ताजुशशरीअह को तक्रीर व खिताब का मलका अपने वालिद माजिद से मिला है। आप की तक्रीर इन्तेहाई मुअस्सिर, निहायत जामेअ, पुर मज़, दिल पज़ीर, दलायल से मुजय्यन हाती है। उर्दू ज़बान तो आप की मादरी ज़बान है मगर अर्बी ज़बान और अंग्रेज़ी में भी आप को महारत अहले ज़बान के लिए बाइसे हैरत हाती है। उस का अन्दाज़ा हज़रत मुहद्दिसे कबीर अल्लामा ज़ियाउल मुस्तफ़ा अज़मी दामत बरकातहुमुआलिया के इस बयान से बा आसानी से किया जा सकता है। अल्लाह तआला ने आप को कई ज़बानों पर मलका खास अता फरमाया है। उर्दू आप की घरेलू ज़बान है और अर्बी आप की मज़हबी ज़बान है। इन दिनों ज़बानों में आप का खुसूसी मलका हासिल है। अर्बी के क़दीम व जदीद अस्लूब पर आप को मलकए खास रुसूख़ हासिल है। मैं ने इंग्लैंड, अमरीका, साउथ अफ़्रीका, ज़िम्बाबवे, वगैरह में बरजस्ता अंग्रेज़ी ज़बान में तक्रीर व वअज़ करते दखा है। और वहां के तअलीम याफ़ता लोगों से आप की तअरीफें भी सुनीं हैं और यह भी उन से सुना है कि हज़रत को अंग्रेज़ी ज़बान के क्लास्की अस्लूब पर उबूर हासिल है।

इल्मे हदीस

हुज़ूर ताजुशशरीअह इस मैदान के भी शहसवार हैं। इल्मे हदीस एक वसीअ मैदान, मुतअद्दिद अनवाअ, कसरते उलूम और मुख्तलिफ़ फुनून से इबारत है।

शायरी व नअत गोई

बुनयादी तौर पर नअत गाई का मुहरिक इश्के रसूल है। और शायर का इश्क़ रसूल जिस गहराई से पाया जायेगा या जिस नौअियत का होगा उस की उतनी पुर असर व पुर सोंज होगी। सय्यदिना आला हज़रत के इश्के रसूल ने उन की शायरी को जो इम्तियाज़ व इन्फ़रादियत बख़्शी उर्दू शायरी उस की मिसाल लाने से क़ासिर है। आप की नअतया शायरी का एअतेराफ़ इस से बढ़ कर यह होगा कि आज आप दनिया भर में “इमाम नअत गोयां” के लक़ब से पहचाने जाते हैं। इमाम अहमद रज़ा रदियल्लाहु अन्ह की इस तर्ज़े ला जवाब की झलक आप के ख़ोलफा व मु त अल्लिक्कीन और ख़ानदान के शोअरा में नज़र आती है। हुज़ूर ताजुशशरीअह को नअत और खुसूसन आला हज़रत रदियल्लाह अन्ह से जहां

और शायराना जौक भी वरसा में मिला है हुजूर ताजुशरीअह की नअतिया शायरी में आला हज़रत के कलाम की गहराई व गेराई, उस्ताज़े ज़मन की रंगीनी व रवानी, हुज्जतुल इस्लाम की फसाहत व बलागत, मुपितये अअज़म की सादगी व खुलूस का अक्स नज़र आती है। आप की शायरी मअनूविय्यत, पैकर तराशी, सरशारी व शीपतगी, फसाहत व बलागत, हलावत व मलाहत, जज़्ब व कैफ, और साज़ व गदाज़ का नादिर नमूना है। आप की नअतिया दीवान का नाम "सफीनए बख़्शिश" है

इमामत व ख़िताबत

हुज़र ताजुशरीअह ज़मानए तालिब इल्मी से ही इमामत के फराएज़ अन्जाम देने लगे थे, वालिद माजिद मुफ़र्रिसरे अअज़म हिन्द हज़रत मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ जीलानी बरैलवी ने बाज़ाब्ता तौर पर रज़ा मस्जिद की इमामत व ख़िताबत का मनसब जलीला के लिए तहरीरी वसिय्यत नामा जारी किया था। हुज़ूर मुपितये अअज़मे हिन्द कुदि स सिर्रहु का मअमूल था कि जब हुज़र ताजुशरीअह हमराह होते तो आप को ही नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फरमाते। एक अरसए दराज़ से नमाज़े इंदैन बरैली की ईदगाह में इमामत के फराएज़ अन्जाम दे रहे हैं, जब आप कुरआन शरीफ की तिलावत करते हैं या खुतबा पढ़ते हैं तो लहने दाउदी की याद कानों में बाज़ गश्त करने लगती है। आप की क़िरात में अर्बी, मिस्री, लब व लहजा पाया जाता है।

तर्जुमा निगारी

तर्जुमा निगारी इन्तेहाई मुश्किल फन है। तर्जुमा का मतलब किसी ज़बान के मज़मून को इस अन्दाज़ से दूसरी ज़बान में मुन्तक़िल करना है कि क़ारी को एहसास न होने पाये कि इबारत बे तरतीब है या उस में पेवन्द क़ारी की गई है। कमा हक्कहू तर्जुमा करना बड़ा मुश्किल काम है। इस में एक ज़बान के मआनी और मतालिब को दूसरे ज़बान में इस तरह मुन्तक़िल किया जाता है। कि असल इबारत की खूबी और मतलब व मफहूम क़ारी (पढ़ने वाले तक) तक सही सलामत पहुँच जाये इस बात का पूरा ख्याल रख्खा जाये असल इबारत न सिर्फ़ पूरे ख्यालात व मफाहीम बल्कि लहजा व अन्दाज़, चाशनी व मिठास, जाज़्बिय्यत व दिलकशी, सख्ती व दुरुश्तगी, बे कैफी व बे रंगी, इसी एहतियात के साथ आए जो मुहर्रर का मन्शा है ज़बान व बयान का मअयार ब मुताबिक़ असल का मिस्दाक़ हो। इल्मी व अदबी तर्जुमे तो सिर्फ़ दुनियावी एतिबार से देखे जाते हैं लेकिन दीनी किताबों खास कर कुरआन व हदीस का तर्जुमा इन्तेहाई मुश्किल

आर वक़्त तलब अम्र है बिल खुसूस शरई एतेबार भी ख़तरह लाहिक़ रहता है कि कहीं असल माअने में तहरीफ़ (फर्क़) न हो जाये कि सारा किया धरा बरबाद और शरई मुआख़ेज़ा न हो इस का अन्दाज़ा वही कर सकता है जिस का इस से वास्ता पड़ा हो

मुख़्तसर यह है कि हुज़ूर ताजुशरीअह को जहां दिगर उलूम व फुनून पर मुकम्मल दस्तर्स हासिल हैं। जो आपकी किताबों से ज़ाहिर हैं।

जाहेरी व बातिनी उलूम व फुनून के उसात्जह

(1) जानशीने आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत, मुपितये अअज़म अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ाँ नूरी कुदि स सिर्रहु

(2) जानशीने आला हज़रत शहज़ादए हुज्जतुल इस्लाम मुफ़र्रिसरे अअज़म अल्लाम इब्राहीम रज़ा खान कादरी कुदि स सिर्रहु

(3) बहरुल उलूम वलफुनून हज़रत अल्लाम मफ़्ति सय्यद अफज़ल हुसैन मुंगेरी बिहारी सम्मा पाकिस्तानी अलैहिर्रहमह

(4) सय्यदुल उलमा हज़रत अल्लामा सय्यद आले मुस्तफा कादरी बरकाती कुदि स सिर्रहु

(5) अहसनुल उलमा हज़रत हज़रत सय्यद हसन हैदर कादरी बरकाती कुदि स सिर्रहु

(6) ख़लीफ़ए आला हज़रत बुरहाने मिल्लत अल्लामा मुफ़्ती बुरहानुल हक़ जबलपूर कुदि स सिर्रहु

(7) वालिदा माजदा शहज़ादिये हुज़ूर मुपितये अअज़म रदियल्लाहु अन्हा

(8) रेहाने मिल्लत हज़रत अल्लामा मुहम्मद रेहान रज़ा ख़ाँ रहमानी मियां कुदि स सिर्रहु

नोट:- आप के सगे बड़े भाई हैं

(9) हज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद इनआमुल्लाह खान तस्नीम हामिदी अलैहिर्रहमह बरैलवी

(10) फज़ीलतुशशैख़ हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद मुहम्मद समाही शैखुल हदीस वत्तफसीर, जामिया अज़हर काहरा मिस्र

(11) फज़ीलतुशशैख़ हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल ग़फ़ार, उस्ताज़ुल हदीस, जामिया अज़हर काहरा मिस्र

(12) फज़ीलतुशशैख़ हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुत्तव्वाब मिस्री, उस्ताज़ मन्ज़रे इस्लाम बरैली शरीफ़

(13) सदरुल उलमा हज़रत अल्लामा तहसीन रज़ा खानसाहब कुदि स सिर्रहु

हुजूर ताजुशरीअह मद्दा ज़िल्लहुल आली जो सनद हदीस अपने तिलामज़ह (शागिर्द—चेलों)को अता फरमाते हैं उस में सब पहले नाम सदरुल उलमा अल्लामा तहसीन रज़ा खां कादरी मुहद्दिस बरैलवी अलैहिर्रहमह का है। इस मुख्तसर रिसाले में हुज़र ताजुशरीअह के उस्ताज़ो पर रोशनी डालने की गुन्ज़ाईश नहीं है।

उलमाए अरब से राबते

अरब उलमा जिन का तअल्लुक अहले सुन्नत से है वह आप से बे पनाह मु त अस्सिर हैं, चुनान्चे वह लोग आप से सिलसिलए तिलमीज़ भी कायम करते हैं और सिलसिला कादरी बरकाती रज़वी मे दाखिल होते हैं, इज़ाज़त व खिलाफत के तालिब भी होते हैं नीचे कुछ बिदेसी उलमाए किराम का नाम दिया जा रहा है जो बरैली शरीफ भी आचुके हैं।

- (1) हज़रत अल्लामा सय्यद अलवी मुहद्दिस मक्का मुकर्रमा
- (2) हज़रत अल्लामा शैख उमर बिन सलीम, खतीब व इमाम, इमामे अजज़म मस्जिद, मुहल्ला अजज़मिया बग़दाद शरीफ
- (3) हज़रत अल्लामा शैख जमील फिलिस्तीनी, सिलसिलए नक्शबन्दिया के शैख
- (4) हज़रत अल्लामा अब्दुल जलील अल अता, मुहद्दिसे दमिश्क, दमिश्क
- (5) हज़रत अल्लामा शैख ताहा हबीशी, उस्ताज़ कस्मुल फलस्फा वल अकीदह, जामेअ अज़हर मिस्र
- (6) हज़रत अल्लामा मुपती अब्दुल फत्ताह अल बज़्म, मुफ्तिये अजज़म दमिश्क
- (7) हज़रत अल्लामा सय्यद मुहम्मद फाज़िल जीलानी, मरकज़ अल जीलानी लिलबहूसुल इल्मिया, इस्तम्बोल तुर्की
- (8) हज़रत अल्लामा सय्यद मुहम्मद हाशिम मुहम्मद अली हुसैन मेंहदी, मक्कतुलमुकर्रमह
- (9) हज़रत अल्लामा शैख मुहम्मद तरशान, उस्ज़ाज़ हदीस व फिका, दमिश्क
- (10) हज़रत अल्लामा अलाउल हाइक, उस्ताज़ हदीस व फिका, दमिश्क
- (11) हज़रत अल्लामा शैख वाइल अल बज़्म, उस्ताज़ हदीस व फिका, दमिश्क
- (12) हज़रत अल्लामा शैख जमाल फारुकुद्दकाक, उस्ताज़ कुल्लियातुद्दअवतुल इस्लामिया, जामेअ अज़हर मिस्र
- (13) हज़रत अल्लामा शैख उसामा सय्यउ महमूदुल अज़हरी, उस्ताज़ कुल्लियातुद्दअवतुल इस्लामिया, जामेअ अज़हर मिस्र

और खास बात यह कि हुजूर ताजुशरीअह ने जामेअ अज़हर मिस्र में बुखारी शरीफ का दर्स दिया जिस में 50 मुल्कों के तलबा शरीफे दर्स थे। मु त अद्दिद दरगाहों के मशाइख (बुज़रुगों) से भी मुलाकातें हुई मदीना मुनव्वरह, मक्कतुल मुकर्रमा, दमिश्क, में भी आप ने दर्से बुखारी दिया जिस में सैकड़ों की तअदाद में अरब शरीफ हुए, मुत्तहेदह अरब के बे शुमार उलमाअ व मशाइख आप से शर्फ तिलमिज़ हासिल करचुके हैं बहोतों को सनदे हदीस भी इनायत की है और बअज़ को इज़ाज़त व खिलाफत से भी नवाज़ा है।

अरब उलमाअ आला हज़रत से बड़ी अकीदत रखते हैं हुजूर ताजुशरीअह के मु त अल्लिक अच्छा तअस्सुर रखते हैं।

उस के इलावह हुज़र ताजुशरीअह के म त अद्दिद गोशे ऐसे हैं जिन पर लिखने की ज़रूरत है उज्जलत में मुख्तसर जो तय्यार हो सका वह हाज़िर है, इन्शाअल्लाह तआला तफसील आइन्दा किताबों में मुलाहिज़ा फरमाइएगा

आप की खिदमात और चहारदांग आलम में शोहरत और हर जा मक़बूलियत देख कर मुझे आला हज़रत रदियल्लाह अन्ह कि वह बशारत याद आती है जो आप ने बैसलपूर में हज़रत मफस्सिरे अजज़म की तरफ इशारह करते हुए दी थी। एक मरतबा आला हज़रत अज़ीमुल बरकत इमाम अहमद रज़ा अपने चहीते खलीफह रुहानी साहबज़ादा हज़रत मौलाना इरफान अली साहब के दौलत कदह पर तशरीफ ले गये, साथ में आप के पोते हज़रत मुफस्सिरे अजज़म भी थे, उस वक्त आप की उमर 10 या 12 बारह साल होगी वहां आला हज़रत ने मुफस्सिरे अजज़म की तरफ इशारह करते हुए फरमाया इस (इशारह मुफस्सिरे अजज़) से मेरी औलाद में एक साहबज़ादा होगा जो इस्लाम की बड़ी खिदमत करेगा और मेरा नाम रोशन करेगा।

हज़रत मौलाना इरफान अली साहब के साहबज़ादे जनाब मुहम्मद मअवान अली साहब और उन के पोते इस बात के रावी हैं, शहज़ादे सदरुशरीअह हज़रत अल्लामा बहाउल मुस्तफा कादरी अमजदी रज़वी मद्दा ज़िल्लहुल आली से फकीर ने सुना है उन्होंने ने इस साल "उर्स नूरी" के मौक़अ पर तक़रीर में इस वाकिये का जिक्र भी किया था। वाकई हुजूर ताजुशरीअह की आलमगीर शोहरत, तक्वा व तहारत, शरीअत की पासदारी, तसल्लुब फिदीन, इल्म व फज़ल, फज़ल व कमाल को देख कर यही लगता है कि आप ही की ज़ात वाला सिफात मुजद्दिदे अजज़म की बशारत का मिस्दाक है

मुफ्तिये अअज़म का ज़रह किया बना अख़्तर रज़ा ।

महफिले अन्जुम में अख़्तर दूसरा मिलता नहीं ।।

मौजूं होगा ?

मुफ्तिये अअज़म का जलवह क्या बना अख़्तर रज़ा ।

शर्फ़ गुस्ले खान ए कअबा शरीफ

ज़िलहज्जा के महीने में हर साल एक बार कअबा शरीफ का ग़िलाफ बदला जाता है। और इसी तरह साल में मख़सूस अय्याम में ताला खोला जाता है और कअबा शरीफ के अन्दरुनी हिस्से को धोया जाता है। जिसे गुस्ले कअबा कहते हैं। इन्हीं मख़सूस अय्याम में से यकुम शअबान है। जिस में ताला खोला जाता है। और अन्दरुनी हिस्से को गुस्ल दिया जाता है। फिर मख़सूस हज़रात जिन्हें बादशाह या कलीद बरदार की तरफ से इजाज़त होती है वह हज़रात अन्दर जाकर नमाज़ें अदा करते हैं, दुआएं करते हैं और अपना दामने गौहर मुराद से भरते हैं।

गुस्ले कअबा का मन्ज़र इतना हसीन और पुर कैफ होता है। जिस का बयान करना या लिखना मुम्किन नहीं। बस इतना समझये कि वह मुशाहेदा (देखने) से तअल्लुक रखता है। ऐसी नूरानी कैफियत, हर तरफ से अल्लाहु अक्बर की सदाएं बुलन्द होती रहती हैं, और कहीं से तस्बीह व तहलील की आवाज़ें, कहीं से सिस्कियों और आहों की गूँजें सुनाई देती हैं। पूरा मताफ और मस्जिदे हराम खचा खच भरा होता है। यकुम शअबान को फजर के बअद हिफाज़ती दस्ता तअय्युनात हो जाता है जो कअबा को अपने घेरे में कर लेता है। फिर कलीद बरदार दरवाज़ा खोलने के लिए आते हैं। चूंकि कअबा की चौखट ज़मीन से तकरीबन नौ फिट की उंचाई पर है इस लिए एक रिमोट (Remote) सिस्टम की सीढ़ी जो मताफ में रखी रहती है। ला कर फिट की जाती है उस के बअद कअबा का दरवाज़ा खोला जाता है। और गुस्ल दिया जाता है और यह हज़रात गुसाला गैलनों में महफूज़ कर लेते हैं, पूछने पर मअलूम हुआ कि बरकतन उसे इस्तेमाल करते हैं (यहां शिर्क का हुक्म लगाना भूल जाते हैं) उस के बअद बादशाह मअ चन्द वुज़रा अन्दरुने कअबा दाख़िल होता है और निकल कर तवाफ करता है। फिर दिगर हज़रात जाते हैं सिक्यूरिटी (Security) का सख़्त इन्तेज़ाम होता है। आम आदमी पर नहीं मार सकता है। बादशाह की तरफ से और कलीद बरदार की तरफ से जिन जिन मुअज़्ज़िज़ीन को इजाज़त मिली होती है वह हज़रात बादशाह के चले जाने के बअद कअबा के अन्दर

सहाबिए रसूल की नस्ल में है, उन की तरफ से हज़रत ताजुशशरीअह मद्दा ज़िल्लहुल आली व शहज़ादए ताजुशशरीअह मद्दा ज़िल्लहू को दअवत मिली। मौजूदा कलीदे बरदार के वालिदे माजिद (जिन का कुछ साल पहले इन्तेकाल हुआ) से मक्का मुअज़्ज़मा के बहोत सारे खुश अकीदा उलमा (आलिम की जमअ) बिल खुसूस अल्लामा सय्यद अलवी मालिकी मुहद्दिस मक्कतुल मुकर्रमा वगैरह के राबते थे। और हैं बल्कि बहोत से उलमाए अरब हुज़ूर ताजुशशरीअह से इरादत (मुरीद) व ख़िलाफत और सनदे हदीस की इजाज़त रखते हैं। जब उलमाए मक्का ने हुज़ूर ताजुशशरीअ का इल्मी व अदबी खिदमात का तआरुफ कराया तो मौजूदह कलीदे बरदार के वालिदे माजिद ने चाहा कि मैं मुजद्दिदे अअज़म मौलाना शाह अहमद रज़ा कुदि स सिरहू के नबीरए ताजुशशरीअह शैखुल हिन्द हज़रत मौलाना मपती मुहम्मद अख़्तर रज़ा कादरी साहब को अन्दरुने कअबा दाख़ले की दअवत दूं। हुज़ूर के एक मुरीदे खास जनाब फारुक़ सौदागर साहब हैं, जिन के तअल्लुकात मौजूदा कलीद बरदार से हैं। उन्होंने ने उन के सामने यह बात रखी और अर्ज किया कि इस साल शअबानुल मुअज़्ज़म 1434 हिजरी में जब गुस्ल कअबा हो तो उस में मुफ्तिये अअज़मे हिन्द हज़रत अल्लामा मुपती शैख़ मुहम्मद अख़्तर रज़ा मद्दा ज़िल्लहुल आली और उन के साहबज़ादे को कअबा के अन्दर दाख़िल होने के लिए मदउ कर दें (दअवत दे दें), जिसे उन्होंने ने बड़ी फराख़दिली से कबूल करते हुए दअवत दे दी।



मुहिब्बे गिरामी हज़रत अल्लामा मौलाना अस्जद रज़ा साहब किब्ला ने फरमाया कि इम्साल यकुम शअबानुल मुअज़्ज़म 1434 हिजरी 10 जून 2013 इस्वी को इन्शाअल्लाह तआला वालिदे ग्रामी के साथ कअबा शरीफ के अन्दर दाखिल होंगे। सुन कर बड़ी मुसर्त हुई। फिर मैं ने अर्ज़ किया कि हज़रत फकीर भी उमरे के लिए जा रहा है लेकिन हमारा टूर मदीना मनव्वरा जाएगा। मगर फिर भी हम कोशिश कर के इन्शाअल्लाह इस सुहाने मन्ज़र का नज़्ज़ारा करने ज़रूर हाज़िर होंगे।

चुनान्चे हम चन्द अपराद (हज़रत अल्लामा डाक्टर गुलाम मुस्तफा नज़्मुल कादरी साहब, हज़रत मौलाना कमरुज़्ज़मा साहब, जनाब शअबान रज़वी साहब, जनाब हाजी शम्सुल हक रज़वी साहब, और हैदराबाद के दो आलिमे दीन, ) 9 जून को मदीना मनव्वरा से मक्का मकर्रमा के लिए रवाना हुए और फजर से पहले हरम शरीफ पहुँच कर नमाज़े फजर अदा करने के बअद तवाफ के लिए हाज़िर हुए ही थे। कि देखा पोलिस वाले कअबा शरीफ के चारों तरफ फैले हुए हैं और सफा मरवह की तरफ से आने वाले रास्ते से मख़सूस हज़रात पोलीस के घेरे में आ आ कर कअबा शरीफ में दाखिल हो रहे हैं। अचानक हज़रत ताजुशशरीअह मद्दा ज़िल्लहुल आली के अमामे पर नज़र पड़ी मैं ने मौलाना कमरुज़्ज़मां और डाक्टर नज़्मुल कादरी साहब से कहा कि लग रहा है अपने हज़रत हैं। इतने में सब की नज़र उस तरफ मुड़ी तो हुज़ूर का चमकता दमकता नूरानी चेहरा नज़र आया साथ ही हज़रत अल्लामा अस्जद रज़ा साहब भी अपनी नूरानी सूरत लिए हज़रत के साथ साथ चल रहे थे। और कुर्ब व जवार में हर शख्स इन हज़रात को देख कर यह कह रहा था अरे यह कौन हैं? मन हाज़ा मन हाज़ा? हज़रत अल्लामा डाक्टर गुलाम मुस्तफा नज़्मुल कादरी साहब, हज़रत मौलाना कमरुज़्ज़मा साहब, जनाब शअबान रज़वी साहब, जनाब हाजी शम्सुल हक रज़वी साहब, और जो हज़रात जानते थे वह सब अपने एतेबार से बता रहे थे कि हुवा अमीरुल हिन्द, शैखुल हिन्द, मुपितयल अअज़म बिदयारिल हिन्द वगैरहा, बल्कि मौलाना कमरुज़्ज़मां की ज़बान से नारए तकबीर भी बुलन्द हो गया फिर बोले : मुफ्ती साहब दिल कर रहा है कि बड़ा ज़ोर दार नअरा लगाउं। यकीन जानिए हर शख्स उन नूरानी चेहरों को देख रहा था और बग़ल में खड़े शख्स से उंग्लियों का इशारा करते हुए पूछ रहा था अरे यह कौन हैं?

अरे यह कौन हैं? जब हज़रत ताजुशशरीअह और हज़रत अल्लामा अस्जद रज़ा साहब सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे तो सीढ़ियों पर खड़ा हर शख्स हुज़ूर के चेहरे को

देख कर आगे आ रहा था और पेशानी चूम कर कर अर्ज़ कर रहा था। शैख मेरे लिए अल्लाह से दुआ करें। हज़रत अल्लामा अस्जद रज़ा साहब ने इस्तेफ़सार पर फरमाया कि जब हम लोग अन्दर पहुँचे तो दिल की कैफ़ियत ऐसी हो गई कि बताया नहीं जा सकता है।

इधर उधर निगाहें जमाईं मगर निगाह झुक गई नमाज़ें अदा कीं और दुआएं मांगीं। और अन्दर जो हज़रात थे वह सब अब्बा हुज़ूर की तरफ शैख कबीर कह कर आगे बढ़ते और दुआ की दरख़्वास्त करते थे। पेशानी चूमते और पूछते कौन हैं, कहाँ से तशरीफ लाए। तकरीबन 28 मिनट के बअद हज़रत कअबा शरीफ से बाहर तशरीफ लाए तो बाहर आते ही लोगों ने अपने घेरे में ले लिया और बरकत हासिल करने के लिए दस्त बोसी वगैरह करने लगे। हज़रत ताजुशशरीअह के साथ जो मख़सूस अफराद हिन्दुस्तान के ओर सउदी अरब के थे उन हज़रात ने मौकअ ग़नीमत जानते हुए जेब तन लिबास को बतौर तबर्क हुज़ूर ताजुशशरीअह से और साहबज़ादे से हासिल कर लिया। इस्तेफ़सार पर मअलूम हुआ (यअनी पोछने पर मअलूम हुआ) हज़रत अल्लामा मौलाना अस्जद रज़ा खान साहब ने बताया कि अन्दरुने कअबा अम्बियाए किराम से मनसूब बहोत से तबर्क़ात रखे हुए हैं।

हज़रत के अन्दरुने कअबा दाखिल होने की फ़रहत बख़्श ख़बर जूँ ही मुरीदीन व मु त वस्सिलीन, खुश अकीदा मुसलमानों तक पहुँची मुबारक बादियों का न थमने वाला सिलसिला शुरू हो गया। मेरे पास मदीनए मनव्वरा में बिलगेराम शरीफ से मुर्शदी अल्लामा सय्यद अवैस मुस्तफा वास्ती कादरी मद्दा ज़िल्लहुल आली का फोन आया और हुक्म दिया कि हज़रत को मुबारक बादी पेश करो और कहो कि हम सुन्नियों के लिए यह बड़ी मुसर्त की बात है। अल्लाह तआला हज़रत के फुयूज़ो बरकात से हम सुन्नियों को माला माल फरमाए। मुपितये अअज़म राजस्थान, हज़रत अल्लामा मुहम्मद अशफाक साहब ने मुझ से इस रुआद को सुनी और फरमाया साहब! हम लोगों के लिए यह बड़ी बात है। और हम सब सुन्नी हज़रत के दिल में रह कर कअबा के अन्दर दाखिल हो गये। उन से मेरा सलाम कहना और मुबारकबादी पेश कर देना। इसी तरह बे शुमार अफराद और कई मुल्कों से अहम शख़्सिय्यात ने इज़हारे मुसर्त लिया और मुबारक बादियां पेश कीं।

जब हज़रत फैज़ान ले कर बरैली शरीफ तशरीफ लाए तो पूरे शहर ने शान्दार इस्तेक़बाल किया और जुलूस की शकल में इज़्ज़ाहरे मुसरत करते हुए, नहारए तक्बीर व रिसालत बुलन्द करते हुए दरगाहे आला हज़रत पहुँचे। और हज़रत ताजुशशरीअह मद्दा ज़िल्लहुल आली को मुबारकबादी का नज़राना पेश किया। अल्लाह तआला हासिदीन की हसद और बद नज़रों की बद नज़री से और दुशमनों के शर से हज़रत ताजुशशरीअह, शहज़ादए ताजुशशरीअह मद्दा ज़िल्लहुमा और पूरे खान्वादए आला हज़रत को महफूज़ फरमाए और हुज़ूर के फैज़ान से हम सुन्नियों को माला माल फरमाए।

(हवाला:— माहनामा, सुन्नी दनिया, बरैली शरीफ, सितम्बर 2013, इदारिया:—मौलाना मुहम्मद यूनुस रज़ा मोनिस अवेसी, सफा 3 ता 5 )

बिस्मिल्लाहिर्रहानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम

शजरतुन तय्यिबतुन अस्तुहा साबितुं व फरउहा फिस्समाअ हाज़िही सिलसिलती मिम्मशइख़ फित्तरीक़ति आलिय्यतिल आलियतिल कादिरिय्यतित्तयिबतिल मुबारकह अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिम्मअदिनिल जूदि वल्क.र.मि व आलिहिल किरामि अजमईन (1)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल करीम अलिथ्यिनिल मुर्तदा कर्मल्लाहु वज्हह (2)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल इमामि हसैनिनिश्शहीदि रदियल्लाह तआला अन्ह (3)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल इमामि अलिथ्यिबिनिल हुसैनि ज़ैनिल आबिदीन रदियल्लाहु तआला अन्हुमा (4)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल मुहम्मदिब्नि अलिथ्यिनिल बाकिरि रदियल्लाहु तआला अन्हुमा (5)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल इमामि मुहम्मदिब्नि जअफ़रिब्नि मुहम्मदिब्निस्सादिकि रदियल्लाहु तआला अन्हुमा (6)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल इमामि मूसबि जअफ़रिनिल काज़िमि रदियल्लाहु तआला अन्हुमा (7)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल इमामि अलिथ्यिबि मूसर्रिदा रदियल्लाहु तआला अन्हुमा (8)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलशशैख़ि मअरुफ़ि निल कख़्ख़ी रदियल्लाहु तआला अन्ह (9)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलशशैख़ि सरिय्यि निस्सक़ती रदियल्लाहु तआला अन्ह (10)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलशशैख़ि जुनैदि निल बग़दादिय्य रदियल्लाहु तआला अन्ह (11)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलशशैख़ि अबी बकि निश्शब्लिथ्यि रदियल्लाहु तआला अन्ह (12)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलशशैख़ि अबिल फ़दलि वाहिदित्तमीमीथ्यि रदियल्लाहु तआला अन्ह (13)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलशशैख़ि अबिल फ़रहित्तरतूसिय्यि रदियल्लाहु तआला अन्ह (14)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलशशैख़ि अबिल हसनि अलिथ्यि निल क़रशिय्यिल हक्कारिय्यि रदियल्लाहु तआला अन्ह (15)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलशशैख़ि अबी सईदिनिल मख़्ज़ूमिय्यि रदियल्लाहु तआला अन्ह (16)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल करीम ग़ौसिस्सक़लैनि व ग़ौसिल क़ौनैनिल इमामि अबी मुहम्मदिन अब्दिल कादिरिल हसनिथ्यिल हुसैनिथ्यिल जीलानिय्यि सल्लल्लाहु तआला अला ज़दिहिल क़ामि व फ़रुइहिल ख़िफ़ामि व मुहिब्बीहि वल मुन्तमीना इलैहि इला यौमिल कियामि व बारिक वसल्लिम अबदा (17)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल अबी बकिन ताजिल मिल्लति वदीनि अब्दिर्रज़्ज़ाकि रदियल्लाहु तआला अन्ह (18)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल अबी स्वालिहीन नस्रिन रदियल्लाहु तआला अन्ह (19)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल मुहिथ्यिदीन अबी नस्रिन रदियल्लाहु तआला अन्ह (20)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल  
अलिथ्यि रदियल्लाहु तआला अन्हु (21)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल  
मूसा रदियल्लाहु तआला अन्हु (22)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल  
हसनिन रदियल्लाहु तआला अन्हु (23)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल  
अहमदल जीलानिथ्यि रदियल्लाहु तआला अन्हु (24)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलशशैखि  
बहाइद्दीनि रदियल्लाहु तआला अन्हु (25)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल  
इब्राहीम अल ईरजिथ्यि रदियल्लाहु तआला अन्हु (26)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलशशैखि  
मुहम्मद भिकारी रदियल्लाहु तआला अन्हु (27)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलल  
काजी ज़ियाइद्दीन अल मअरुफ़ बिश्शैखि जिया रदियल्लाहु तआला अन्हु (28)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलशशैखि  
जमालिल अवलिया रदियल्लाहु तआला अन्हु (29)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल  
मुहम्मदिन रदियल्लाहु तआला अन्हु (30)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल  
अहमद रदियल्लाहु तआला अन्हु (31)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल  
फ़दलिल्लाहि रदियल्लाहु तआला अन्हु (32)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल  
मौलस्सय्यिदिशशाह बरकतिल्लाहि रदियल्लाहु तआला अन्हु (33)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल  
अलि मुहम्मदिन रदियल्लाहु तआला अन्हु (34)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल  
मौलस्सय्यिदिशशाह हम्ज़ह रदियल्लाहु तआला अन्हु (35)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिशशाह  
अबिल फ़दलि शम्सिल मिल्लति वद्दीनि आलि अहमद अच्छे मियां रदियल्लाहु  
तआला अन्हु (36)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलस्सय्यिदिल  
करीमिशशाह आलिरसूलिल अहमदी रदियल्लाहु तआला अन्हु (37)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौललकरीमि  
सिराजिस्सालिकीन नरिल आरिफीन सय्यिदी अबिल हुसन अहमदुन्नूरिथ्यिल मारहरवी  
रदियल्लाहु तआला अन्हु (38)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम वअलल मौलल हुमामि  
इमामि अहल्लिसुन्नति मुजदिदिशशरी अतिल आतिरते मुअथ्यिदिल मिल्लतित्ताहिरति

हज़रतिशशैखि अहमद रज़ा ख़ान रदियल्लाहु तआला अन्हु बिरिदा सर्मदीयि (39)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम जमीअंव व अशशैख  
हुज्जतिल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा ख़ान रदियल्लाहु तआला अन्हु (40)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम जमीअंव व अलशशैख  
जुब्दतिल अतकिया अलमुपितल अअजमि बिलहिन्द मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा  
ख़ान अलकादिरि रदियल्लाहु तआला अन्हु (41)

अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम जमीअंव व अला  
अब्दिकल फकीर मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान अलअजहरी अलकादिरि गुफिर लहू  
व लिवालिदैहि अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम व अलल  
फकीर कृकृकृ-----गुफिरालहू अल्लाहुम्मा  
सल्लि व सल्लिम व बारिक अलैहि व अलैहिम जमीअंव व अला सारि अवलियाइका  
व अलैना, व बिहिम व लहुम व फीहिम व मअहुम या अरहमर्राहिमीन आमीन !

( )

महफिले अन्जुम में अख़्तर दूसरा मिलता नहीं ।।

शिज़रए कादिरिया बरकातिया, रज़विथ्या

या इलाही रहम फरमा मुस्तफ़ा के वास्ते

या रसूलल्लाह करम कीजिए खुदा के वास्ते

मुशिकलें हल कर शहे मुशिकल कुशा के वास्ते

कर बलाएं रद्द,शहीदे कर्बला के वास्ते

सय्यिद सज्जाद के सदके में साजिद रख मुझे

इल्मे हक़ दे बाक़रे इल्मे हुदा के वास्ते

सिदक सादिक का तसद्दुक सादिकल इस्लाम कर  
 बे गज़ब राजी हो काज़िम और रज़ा के वास्ते  
 बहरे मअरुफ व सिर्री मअरुफ दे बेखुद सिर्री  
 जुन्दे हक में गुने जुन्दे बा सफा के वास्ते  
 बहरे शिब्ली शेरे हक दुनिया के कुत्तों से बचा  
 एक का रख अब्दे वाहिद बे रया के वास्ते  
 बुल फरह का सदका कर गुम को फरह दे हसन व सअद  
 बुल हसन और बू सईद सअदे ज़ा के वास्ते  
 कादरी कर कादरी रख कादिरियों में उठा  
 कद्र अब्दुल कादिर कुदरत नुमा के वास्ते  
 अहसनल्लाहु लहू रिज़्कन से दे रिज़्के हसन  
 बन्दए रज़्ज़ाक ताजुल अस्फिया के वास्ते  
 नस्राबी सालेह का सदका स्वालेह व मन्सूर रख  
 दे हयाते दीन मुहिय्ये जान फिज़ा के वास्ते  
 बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे गुम गुलज़ार कर  
 भीक दे दाता भिकारी बादशाह के वास्ते  
 ख़ानए दिल को ज़या दे रुए ईमां को जमाल  
 शहे ज़िया मौला जमालुल औलिया के वास्ते  
 दे मुहम्मद के लिए रोज़ी कर अहमद के लिए  
 ख़ाने फज़लुल्लाह से हिस्सा गदा के वास्ते  
 दीन व दुनया की मुझे बरकात दे बरकात से  
 इश्के हक दे इश्की इश्के इन्तेमा के वास्ते  
 हुब्बे अहले बैत दे आले मुहम्मद के लिए  
 कर शहीदे इश्क हम्ज़ह पेशवा के वास्ते  
 दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुर नूर कर  
 अच्छे पियारे शम्से दीं बदरुल उला के वास्ते  
 दो जहां में खादिमे आले रसूलल्लाह कर  
 हज़रत आले रसूले मुक्तदा के वास्ते  
 नूर जां व नूरे ईमां नूर कब्र व हशर दे  
 बुल हुसैन अहमद नूरी लिका के वास्ते  
 कर अता अहमद रज़ाए अहमद मुर्सल मुझे  
 मेरे आका हज़रत अहमद रज़ा के वास्ते

हामिद व महमूद और हम्माद अहमद कर मुझे  
 सय्यदी हामिद रज़ाए मुस्तफा के वास्ते  
 साए जुम्ला मशाइख या खुदा हम पर रहे  
 रहम फरमा आले रहमां मुस्तफा के वास्ते  
 बहरे जीलानी मियां जो पर तोए फारुक थे  
 इम्तियाज़ हक व बातिल दे गदा के वास्ते  
 ऐ खुदा अख़्तर रज़ा को चर्ख पर इस्लाम के  
 रख दरख़शां हर घड़ी अपनी रज़ा के वास्ते  
 सदका उन अअयां का दे छः अैन इज़्जो इल्मो अमल  
 अपव इरफां , आफियत इस बे नवा के वास्ते  
 फातिहा सिलसिला

यह शिजरए मुबारका हर रोज़ बादे नमाज़े सुबह एक बार पढ़ लिया करें, उस  
 के बाद दरुदे गौसिया सात बार अल्हम्दो शरीफ एक बार आयतल कुर्सी एक  
 बार कुल हुअल्लाह शरीफ सात बार फिर दरुदे गौसिया तीन बार पढ़ कर उस  
 का सवाब इन तमाम मशाइखे किराम की अरवाहे तय्यबा की नज़्ज़ करें जिस के  
 हाथ पर बैअत की है। अगर वह ज़िन्दा है तो उस के लिए दुआए आफियत व  
 सलामत करें वरना उस का नाम भी शामिले फातिहा कर लें दरुदे गौसिया यह  
 है

अल्लाहम्मा सल्लि अला सय्यिदना व मौलाना मुहम्मदिम्मअदनिल जूदि वल  
 करमी व आलिही वबारिक वसल्लिम

पन्ज गन्ज कादरी:- सुबह बाद नमाज़े फजर, या अज़ीजु या अल्लाह يا حي يا قيوم يا ذا الجلال والإكرام  
 बाद नमाज़े जुहर, या करीमु या अल्लाह يا كريم يا الله असर बाद या जब्बारु या  
 अल्लाह يا جبار يا الله

बादे नमाज़े मग़िब, या सत्तारु या अल्लाह يا سميع يا عليم इशा बाद या ग़फ़ारु या  
 अल्लाह يا غفار يا الله यह सब वज़ीफे 100 बार अव्वल आख़िर तीन बार दरुद शरीफ  
 और पांच वज़ीफे:-बादे नमाज़े मग़िब और बादे नमाज़े फजर दस बार(1) रब्बि  
 इन्नी मग़लूबन फनतसिर (2) दस बार:- रब्बि इन्नी मस्सनियदुर्गु व अन त  
 अरहमुर्राहिमीन

(3) दस बार :-सयहज़मुल जमउ व युवल्लूनहुबुर (4) दस बार :-अल्लाहुम् म  
 इन्ना नजअलु क फी नुहूरिहिम व नउजुबि क मिन शुरुरिहिम

(5) दस बार :-हस्बिल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अलैहि तवक्कलतु व हु  
अ रब्बुल अर्शिल अज़ीम

अव्वल व आखिर तीन बार दरुद शरीफ फजर बाद और मग़रिब बाद

इस की मदावमत से सब काम बनेंगे और दुश्मन मग़लूब रहेंगे।

क़ज़ाए हाजात व हुसूले ज़फ़र व मग़लूबिए दुश्मनान

(1)अल्लाहु रब्बी ला शरी क लह 874 बार अव्वल व आखिर ग्यारह मरतबा  
दरुद शरीफ इस क़दर अ़ददे मुअय्यन के साथ बा वजू किब्ला रु दो जानू  
बैठ कर रोज़ाना ता हुसूले मुराद पढ़ें और इसी कलिमा को उठते बैठते,  
चलते फिरते,वजू बे वजू हर हाल में बे गिन्ती बे शुमार ज़बान से जारी रखें  
(2)हस्बुनल्लाहु व निअमल वकील, 450 बार रोज़ाना ता हुसूले मुराद, अव्वल  
व आखिर ग्यारह मरतबा दरुद शरीफ, जिस वक़्त घबराहट हो इसी कलिमा  
की बे शुमार तक्सीर करें।

(3)बादे नमाज़े इशा एक सौ ग्यारह बार“तुफ़ैल हज़रत दस्तगीर दुश्मन हो  
वे ज़ेर” अव्वल व आखिर ग्यारह मरतबा दरुद शरीफ ता हुसूले मुराद, यह  
तीनों अमल अमूर मज़कूर के लिए निहायत मज़रब व सहलुल हुसल हैं उन  
से ग़ुलमत न की जाए।

जब कोई हाजत पेश आए हर एक अपने अपने अअ़दाद के मुताबिक़ वक़्ते  
मुतअय्यिन पर पढ़ा जाए पहले और दूसरे के लिए कोई वक़्त मुअय्यन नहीं,  
जिस वक़्त चाहें पढ़ें और तीसरे का वक़्त बादे नमाज़े इशा है।

एक अहम़ दुआ आप के लिए

कोढ़ी, अन्धा, लंगड़े, कैंसर, एडस,आदि रोगी या परेशान को देखे तो यह  
दुआ पढ़ ले तो इन्शाअल्लाह उस रोग और मुसीबत से बचा रहेगा।

दुआ यह है:-अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी आफानी मिम्मब तलाक़ बिही व फ़द द  
ल नी अला कसीरिम मिम्मन ख़ ल क़ तपदीला

الحمد لله الذي عافاني ممن ابتلاك به وفضلني على كثير ممن خلق تفضيلا

नोट— यह दुआ जुकाम बुख़ार व आंख का आना और खुजली के रोगों को  
देख कर न पढ़ें, क्योंकि इन बीमारियों से बदन का सुधार होता है और इन  
बीमारियों के आने की वजह से बहुत सारी बीमारियां दूर हो जाती है।

इस दुआ को रोज़ाना कम अज़ कम तीन बार पढ़ें सुबह शाम , अव्वल आखिर  
दरुद शरीफ ,और किसी भी मुसीबत ज़दह को देख कर पढ़ें (नोट:-मुसीबत  
ज़दह के सामने धीरे से पढ़ें )

एक और दुआ:-बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यदुरु म अ इस्मिही शैउन फिल अर्दि  
वला फिस्समा इ व हुवस्समीउल अलीम

بسم الله الذي لا يضر مع اسمه شيء في الارض ولا في السماء وهو السميع العليم

इस दुआ को रोज़ाना कम अज़ कम तीन बार पढ़ें सुबह शाम , अव्वल आखिर  
तीन बार दरुद शरीफ

ज़रूरी हिदायत

(1) मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअत पर कायम रहें, सुन्नियों के जितने  
मुख़ालिफ़ मसलनवहाबी,देवबन्दी,राफज़ी,तब्लीगी,मौदूदी,नदवी,नेचरी,ग़ैर  
मुक़ल्लिद,कादियानी,वग़ैरहुम हैं सब से जुदा रहें और सब को अपना दुश्मन  
और मुख़ालिफ़ जानें, उन की बात न सुनें उन के पास न बैठें उन की कोई  
तहरीर न देखें कि शैतान को मआज़ल्लाह दिल में वस्वसा डालते कुछ देर नहीं  
लगती। आदमी को जहां माल या आबरु का अन्देशा होगा, हरगिज़ न जायेगा।  
दीन व ईमान सब से ज़ियादा अज़ीज़ चीज़ है। उन की मुहाफ़िज़त में हद से  
ज़्यादा कोशिश फ़र्ज़ है। माल व दनिया की इज़्ज़त, दुनिया की ज़िन्दगी,दुनिया  
ही तक है। दीन व ईमान से हमेशगी के घर में काम पड़ना है और उन की  
फिकर सब से ज़ियादा लाज़िम है।

(2)नमाज़े पन्जगाना की पाबन्दी निहायत ज़रूरी है मर्दों को मस्जिद व जमाअत  
का इल्तेज़ाम भी वाजिब है। बे नमाज़ी मुसलमान गोया तरवीर (फोटू)का  
आदमी है कि ज़ाहेरी सूरत इनसान की मगर इन्सान का काम कुछ नहीं, बे  
नमाज़ी वही नहीं जो कभी न पढ़े बल्कि जो एक वक़्त की भी क़सदन छोड़ दे,  
बे नमाज़ी है। नोकरी, मुलाज़िमत,ख़्वाह तिजारत, वग़ैरह किसी हाजत के सबब  
नमाज़ क़ज़ा कर देनी सख़्त ना शुकरी,पर ले दरजे की नादानी,है,कोई आका  
यहां तक कि काफ़िर का भी अगर कोई नोकर हो,अपने मुलाज़िम को नमाज़  
से बाज़ नहीं रख सकता है,अगर मनअ करे तो ऐसी नोकरी हराम क़तई है।  
और कोई वसीलए रिज़्क़ नमाज़ खो कर बरकत नहीं ला सकता है। रिज़्क़ तो  
उस के हाथ में है जिस ने नमाज़ फ़र्ज़ की है और उस के छोड़ने पर ग़ज़ब  
फरमाता है।



(3) जितनी नमाज़ें क़ज़ा हो गई हैं , सब का ऐसा हिसाब लगायें कि तख़्मीने में बाकी न रह जाये ज़्यादा हो जायें तो हरज नहीं और सब ब क़द्र ताक़त रपता रपता निहायत जल्द अदा करें काहिली न करें कि मौत का वक़्त मअलूम नहीं और जब तक फ़र्ज़ जिम्मा पर बाकी होता है। कोई नपल क़बूल नहीं किया जाता, क़ज़ा नमाज़ें जब मु त अहिद हो जायें, मसलन सौ बार की फ़जर क़ज़ा है तो हर बार यूं निय्यत करें कि निय्यत की मैं ने इस नमाज़े फ़जर की जो सब से पहले मुझ से क़ज़ा हुई,यअनी जब एक अदा हुई,तो बाकियों में जो सब से पहली है। इसी तरह जोहर वग़ैरह हर नमाज़ में निय्यत करें, क़ज़ा में फ़क़त फ़र्ज़ और विन्न यअनी हर दिन और रात की बीस रकअतें अदा की जाती हैं।

(4)जितने रोज़े भी क़ज़ा हुए हों, दूसरा रमज़ान आने से पहले अदा कर लिए जायें कि हदीस शरीफ़ में है जब तक पिछले रमज़ान के रोज़ों की क़ज़ा न कर ली जाये। अगले रोज़े क़बूल नहीं होते।

(5)जो साहबे माल हैं ज़कात भी दें, जितने बरसों की न दी हो फ़ौरन हिसाब कर के अदा करें, हर साल की ज़कात साल तमाम होने से पहले दे दिया करें। साल तमाम होने के बाद देर लगाना गुनाह है। लिहाज़ा शुरु साल से रपता रपता देते रहें, साल तमाम पर हिसाब करें अगर पूरी अदा हो गई तो बेहतर, वरना जितनी बाकी फ़ौरन दे दें और कुछ ज़ियादा निकल गया है तो वह आईन्दा साल में मजरा करलें। अल्लाह अज़्ज़ा वजल्ल किसी का नेक अमल ज़ाए नहीं करता।

(6)साहबे इस्तेताअत पर हज फ़र्ज़ अअज़म है अल्लाह अज़्ज़ा वजल्ल ने उस की फ़र्जियत बयान कर के फरमाया। “वमन क फ र फइन्नल्ला ह ग़निय्यु अ़निल आलमीन”और जो कुफ़र करे तो अल्लाह सारे जहां से बे परवाह है हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तारिके हज को फरमाया कि! चाहे यहूदी हो कर मरे या नस्रानी हो कर। “वल अयाज़िबिल्लाहि तआला” अन्देशों के बाइस बाज़ न रहे।

(7) किज़ब, फहश, चुगली, गीबत, ज़ेना, लवातत, जुल्म, ख़ेयानत, रया, तकब्बुर, दाढ़ी,मुन्डाना या कतरवाना,फ़ासिकों की वज़अ (पहनावा)पहनना, हर बुरी ख़सलत से बचें, जो इन सातों बातों का आमिल रहेगा अल्लाह व रसूल के वअदे से उस के लिए जन्नत है जल्ला जलालहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही व अस्थाबिही वसल्लिम आमीन, बादे नमाज़े पन्जगाना क़ब्ल शरु पन्ज गन्ज कादरी पढ़ें।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम,

वशशम स वल क म र वन्नुजू म मुसख़्बरातिम बिअम्रिही अलालहुल खल्क वल अम्र,तबारकल्लाहु रब्बुल आलमीन, गिर्दे मन गिर्दे ख़ानए मन व गिर्दे ज़न व फरज़न्दाने मन व गिर्दे माल व दोस्ताने मन हसारे हिफ़ाज़त तू शुद व तू निगहदारे बाशी, या अल्लाहु बि हक्कि सुलैमानब्नि दाउदा अलैहिमस्सलाम व बिहक्कि इहयन अशराहिय्यव व बिहक्कि अलीक़म मलीक़न तलीक़ अन त तअलमु मा फिल कुलूबि व बिहक्कि लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि व बिहक्कि या मुअमिनु या मुहैमिनु सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सहबिही वसल्लम एक बार पढ़ कर अंगुशते शहादत पर दम कर के तीन बार अपने सीधे कान की जानिब ब निय्यते हिसार कलिमा की उंगली से हलका खींचा करें। हर वक़्त ऐसा ही करें। फिर उस वक़्त का अमल पन्ज गन्ज कादरी शुरु करें और अगर हर वक़्त की पन्ज गन्ज के अमल के बाद या बासितु 72 बार और इज़ाफ़ा करें तो और बेहतर है। और अगर चाहें तो वक़ते फ़जर“या हय्यु या कय्यूम बिरहमति क अस्तगीसु ” वक़ते असर “हस्बुनल्लाहु व निअमल वकील”वक़ते मग़रिब”रब्बि इन्नी मस्सिनियदुरु व अन त अरहमुर्राहिमीन,वक़ते ईशा”व उफ़व्विदु अमरी इलल्लाह,इन्नल्ला ह बसीरुम बिल इबाद” हर एक,एक सौ ग्यारह बार मअ दरुद शरीफ़ अव्वल आख़िर ग्यारह बार दरुद शरीफ़। नीज़ वक़ते शब दरुदे गौसिया शरीफ़ 500 बार और इज़ाफ़ा करें कि पन्ज गन्ज ख़ास हो जाये, अव्वल आख़िर ग्यारह बार दरुद शरीफ़ या कम अज़ कम तीन बार शब को सोते वक़्त भी यह हिसार पढ़ा करें और अंगुशते शहादत पर दम कर के मकान के हिसार की निय्यत से अपने इर्द गिर्द हाथ लम्बा कर के चौ तरफ़ा हलका खींचे,फिर चित लेट कर घुटने खड़े कर के दोनों हाथ दुआ की तरह फैलाए हुए सीना पर रख कर आयतल कुर्सी शरीफ़ एक बार ,चारों कुल,बित्तरतीब सिर्फ़ कुल हुवल्लाह तीन बार बाकी एक बार पढ़ा करें। और हाथों पर दम कर के अपने सर से पांव तक आगे पीछे दायें बायें तमाम जिस्म पर हाथ फेर कर दायें करवट सोया करें

छोटे बच्चे जो खुद नहीं पढ़ सकते, उन के बड़ों से कोई अपने हाथों पर दम कर के उन के जिस्म पर हाथ फेरा करे। सूरह वाकिया और सूरह यासीन और सूरह मुल्क याद कर लें। यह तीनों सूरतें भी बेला नागा शब को सोते वक़्त पढ़ लिया करें, जब तक हिफज़ याद न हों, कुरआने अज़ीम से देख कर पढ़ें यह सब पढ़ने के बाद फिर कोई बात न की जाए चुप सो रहे हैं शब में अगर ज़रूरी बात करना ही तो पहले ही बात करलें, फिर सूरह काफ़िरुन एक बार पढ़ चुपके सो जायें, इन्शाअल्लाह तआला बलिय्यात, से महफूज़ रहेंगे, दुश्मन दफ़अ होंगे, मुरादें हासिल होगी, रिज़्के हलाल वसीअ होगा, फाका की मुसीबत से महफूज़ रहेंगे, और खुदा नसीब फरमाए, दौलते बेदार दीदारे फ़ैज़ आसार सरकार हुज़र सय्यदुल अब्बार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से इन्शाअल्लाह मुस्तफीज़ होने की कुव्वी उम्मीद रखें। इन्शाअल्लाह तआला खात्मा ईमान पर होगा। अज़ाब से बचे रहेंगे। मगर सहीह पढ़ना शर्त है, कुरआने अज़ीम जो सहीह न पढ़ता हो उस पर फर्ज़ है कि सहीह पढ़ना सीखें हर हरफ को उस के सहीह मख़रज से निकाले

ज़िकरे नफी व अस्बात

लाइला ह इल्लल्लाह 200 बार इल्लल्लाह 400 बार, अल्लाह अल्लाह, 600 बार अब्वल व आख़िर दरुद शरीफ तीन तीन बार

तरकीबे ज़िकरे जहर

ज़िकरे जहर से पहले दस बार दरुद शरीफ, दस बार इस्तेग़फ़ार, 3 बार आयत फज़कुरुनी अज़ कुरु कुम वशकुरुली वला तकफुरुन,, पढ़ कर अपने उपर दम करे फिर ज़िकरे जहर शरु करे लाइला ह इल्लल्लाह 200 बार इल्लल्लाह 400 अल्लाह अल्लाह, 600 बार अब्वल व आख़िर दरुद शरीफ तीन तीन बार,, यह ज़िक्र दो अज़दह तस्बीह है उस के बाद हक़ हक़ सौ बार या कम अज़ कम बतौर सह ज़र्बी या चहार ज़र्बी।

याद दहानी

याद दारी कि वक़ते ज़ादन तू। हमा ख़न्दां बुदन्द तू गुरयां।।

आं चुनीं जी कि वक़ते मुर्दन तू। हमा गुर्यां शुवन्द व तू ख़न्दां।।

ऐ अज़ीज़ याद रख कि ! तेरी पैदाईश के वक़्त सब हंस रहे थे। मगर तो रो रहा था।। ऐसा जीना जी कि तेरी मौत के वक़्त सब रो रहे हों और तू हंस रहा हो।। तो अगर इख़्लास से यादे इलाही में तज़र्रअ व ज़ारी करता रहे, हिज़े हबीब व फिराक़े महबूब में दिल तपां, सीना बरयां व चश्म गिर्यह कनां रहे। तू ज़रूर ज़रूर वक़ते इन्तेक़ाल विसाले पाकर शादां व फरहां और तेरे फिराक़ पर मख़्लूक नालां व परेशान होगी।

ऐ अज़ीज़! अपने यह अहद याद रख, जो तू ने खुदा से उस के इस नाचीज़ गुनहगार बन्दे के हाथ में हाथ दे कर किए हैं और इस फकीर बे तौकीर के लिए भी दुआ कर कि जैसी चाहे वैसी पाबन्दी एहकामे खुदावन्दी में जियूं, ता दमे वापसीं ऐसी पाबन्दी करता रहूं।

ऐ अज़ीज़! तू ने अहद किया है कि तू मज़हबे अहले सुन्नत पर कायम रहेगा हर बद मज़हब की सोहबत से बचता रहेगा, उस पर सख़्ती से कायम रहना, और "लातमूतुन न इल्ला व अन्तुमुस्लिमीन" याद रखना।

ऐ अज़ीज़! याद रखना तू ने अहद किया है कि तू नमाज़, रोज़े, हर फर्ज़, आर वाजिब को भी उन के वक़्तों पर अदा करता रहेगा और गुनाहों से बचता रहेगा, खुदा करे तू—अपने अहद पर कायम रहे। अहद तोड़ना हाराम, सख़्त अ़ैब और निहायत बुरा काम है वफ़ाए अहद लाज़िम है अगर चे किसी अदना से अदना मख़्लूक से किया हो, यह अहद तो तू ने खालिक जल्लो अ़ला से किए हैं।

ऐ अज़ीज़! मौत को याद रख ! अगर मौत को याद रखेगा, तो इन्शाअल्लाह वर्तए हिलाक़त से बचा रहेगा, दीन व ईमान सलामत ले जायगा आर इत्तेबाए शरीअत करता रहेगा, गुनाहों से बचता रहेगा।

ऐ अज़ीज़! आज जाग ले कि मौत के बाद सुख, चैन, इत्मीनान, व आराम की नींद सोता रहेगा, फरिशता तुझ से कहेगा "नम कनूमतिल उरुस" सुन, सुन, सुन, जागना है जाग ले अप्लाक के साए तले।

हश्र तक सोना पड़ेगा खाक के साए तले।।

ऐ अज़ीज़! दुनिया पर मत इतरा, दनिया पर वाला व शैदा होना ही खुदा से गाफिल होना है, दुनिया खुदा से ग़फ़लत ही का नाम है

पर्दा की अहमियत

औरतें पर्दा को फर्ज जानें, हर ना मोहरम से पर्दा फर्ज है। न बे पर्दा फिरें, न बे पर्दा घर में रहें, बारीक कपड़े जिन से बाल या बदन चमके, पहन कर, या पहोंचों से उपर का हिस्सा या पांव के टखने के उपर पिन्डली का हिस्सा और गला, सीना खोल कर या बारीक कपड़ों से नुमायां होने की हालत में महज गैर नहीं जेठ, देवर, बहनोई ही नहीं अपने सगे चचा ज़ाद, खाला ज़ाद, फूफी ज़ाद भाई के सामने होना भी हराम है। बद अन्जाम है मर्दों पर फर्ज है कि अपनी बीवियों बेटियों बहनों वगैरहा महारिम को बे परदगी से बचायें। परदे की ताकीद करें और अदम तअमील पर जिन्हें सज़ा दे सकते हैं सज़ा दें जो मर्द अपने महारिम की बे परदगी की परवाह न करेगा, गैर महरमों के सामने फिराएगा, खुसूसन इस तरह कि बे परदगी के साथ बअज़ अअजाअ की भी बे सत्री भी हो तो वह मर्द दय्यूस ठेहरेगा। वल अयाज़िबिल्लाहि तआला यारां बकोशेद

किए जाओ कोशिश मेरे दोस्तो। न कोशिश से एक आन को तुम थको।। यकीन कामरानी व कामयाबी रखो, "वल्लज़ी न जाहदू फीना लनहदियन्नहुम सुबुलना" जो लोग हमारी तलब में काशिश करते हैं ज़रूर हम उन्हें राह दिखाते हैं, मकसूद से वासिल फरमाते हैं, मौला तुम्हारे लिए फतेह हर बाब खैर बिलखैर फरमाए।

उस की राह में कदम रखते ही अल्लाह करीम के ज़िम्मे करम पर तम्हारे लिए अज़ होगा। "वमय्यख़रुज मिम्बैतिही मुहाजिरन इलल्लाहि व रसूलिही सुम् म युदरिकहुल मौतु फकद व क अ अजरुहू अलल्लाह" हुजूर पुर नूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम फरमाते हैं मन त ल ब शैअं व जद्दा व ज द " हां हां बढ़े चलो, बराबर बढ़े चलो, महब्बत व इख़्लास शर्त है, पीर की महब्बत रसूले महब्बत है, रसूल की महब्बत खुदा की महब्बत है महब्बत जितनी ज़ियादा होगी और अकीदत जितनी पोख़्ता होगी उतना ज़्यादा से ज़्यादा फायदा होगा, अगरचे पी अज़ आहाद नास हो, वह बाकमाल न हो मगर पीर सहीह हो, कि शराएत पीरी का जामेअ हो, सिलसिला मुत्तसिल होगा तो सरकारे फ़ैज़ से ज़रूर फ़ैज़ मिलेगा। ऐ फरज़न्दे तौहीद! ळर अम्र को तौहीद में निगाह रख!

खुदा यके व मुहम्मद यके व पीर यके

तेरा किब्लए तवज्जोह एक होना एक ही रहना लाज़िम, परेशान नज़र, परेशान खातिर, धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का, दी व दनया के हर काम इख़्लास के साथ कर उस के लिए कर, शरीअत की पैरवी कर, जादए शरीअत से एक दम कदम बाहर न धरना, खाना, पीना, उठना, बैठना, लेटना, सोना, जागना, जाना, आना, कहना सुनना, लेना, देना, कमाना, खर्च करना, हर अम्र (हुक्म) उसी के लिए कर, उसी की रज़ा हो मदे नज़र।

ऐ रज़वी! फना फिरज़ा हो कर सरापा रज़ाए अहमदी, रज़ाए इलाही हो जा। तेरा मकसूद बस तेरा मअबूद हो, उस की रज़ा ही तेरा मल्लूब हो।

रया से बचने की कोशिश करते रहना, हर काम इख़्लास से खुदा की रज़ा के लिए इत्तेबाए शरीअत करना यह बड़ी सआदत अज़ीम मुजाहेदा व रियाज़त है, हमारे बअज़ मशाइख़ का इरशाद है कि लोग रियाज़तों की हवस करते हैं कोई रियाज़त व मुजाहिदा अरकान व आदाब नमाज़ की रियाज़त करने के बराबर नहीं। खुसूसन पांचों वक़्त मस्जिद में बा जमाअत अदा करना जब्कि शरई उज़्र न हो।

खत्मे कुरआने करीम

औलियाए कामिलीन का इरशाद है कि बे शुब्हा तिलावते कुरआन बराए क़ज़ा हवाएज मुलर्ब है जितना भी रोज़ाना हो सके अदब के साथ पढ़ता रहे, अगर वह इस तरह पढ़े बहोत बेहतर जल्द इन्शाअल्लाह कामयाब हो रोज़े जुमा से शुरू करो और पन्जशम्बा (जुमेरात) को ख़तम करो रोज़े जुमा सूरए फातेहा से सूरए माएदा तक, शम्बा (सनीचर) को सूरए इनआम से सूरें तौबा तक, और यकशम्बा (इतवार) को सरए यूनुस से सूरए स्वाद तक, चहार शम्बा (बुध) को सूरए ज़मर से सरए रहमान तक और पन्जशम्बा (जुमेरात) को सूरए वाक़िया से आख़िर कुरआन तक ख़लवत में पढ़ें, बीच में बात न करें, हर महि़म के लिए अललइत्साल 12 ख़तम कुरआन को अक्सीरे अअज़म यकीन करें।

फज़ीलते दरुद शरीफ

दरुद शरीफ के फज़ाएल व बरकात बे शुमार अहादीस में मज़कूर है, यहां सिर्फ़ एक हदीस दर्ज की जाती है जिस से अन्दाज़ा होगा कि हुजूर नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दरबारे गुहरबार में हदया दरुद शरीफ पेश करना किस क़दर फवाएद दुनयवी व उख़रवी को मुतज़िमन है।

हज़रत अबी बिन कअब रदियल्लाहु तआला अन्ह फराते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अज़े किया कि हुजूर मैं आप पर ब कस्स्त दरुद

भेजना चाहता हूं पस उस के लिए कितना वक्त मुकर्रर करूं ? नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जितना चाहो,हां अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है,मैं ने अर्ज किया कि आधा वक्त। फरमाया तुम्हें इख़्तैयार में है, हां अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, मैं ने अर्ज किया कि दो तिहाई वक्त। फरमाया तुम्हें इख़्तैयार है, हां अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, मैं ने अर्ज किया कि तमाम वक्त। तो हुजूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अगर ऐसा करो तो तुम्हारे लिए तमाम मक़ासिद (दीनी व दुनयावी )पूरे होंगे और तमाम गुनाह (ज़ाहेरी व बातिनी)मिट्टा दिए जायेंगे।

नोट:— तालिबीन को इख़्तैयार है कि वह मज़कूरह औरदो वज़ाएफ़ मुकर्ररह वक्त पर पढ़ा करें या सिर्फ़ दरुद शरीफ़ कलिमा तय्यबा,तिलावते कुरआन,व तसव्वुर शैख़ में मशगूल रहें । इन्शाअल्लाह तआला अज़ीम फवाएद ज़ाहिर होंगे।

तसव्वुर शैख़

ख़लवत में आवाज़ों से दूर हो ब मकान शैख़,और विसाल होगया तो जिस तरफ़ मज़ार शैख़ हो,मु त वज्जेह हो कर बैठे महज़ ख़ामोश बा अदब ब कमाले खुशू और सूरत शैख़ का तसव्वुर करे और अपने आप को उन के हुजूर जाने और यह ख़्याल दिल में जमाए कि सरकारे रिसालत अलैहि अफ़ज़लुस्सलातु वत्तस्लीम से अनवार फ़ुयूज़ शैख़ के क़ल्ब पर फाइज़ हो रहे हैं और मेरा क़ल्ब शैख़ के नीचे बहालते दरयोज़ा गरी लगा हुआ है, उस में अन्वार व फ़ुयूज़ उबल उबल कर मेरे दिल में आरहे हैं इस तसव्वुर को बढ़ाइए यहां तक कि जिस्म जाए और तकल्लुफ़ की हाजत न रहे, उस की इन्तेहा पर सूरत शैख़ पर सूरत शैख़ खुद मु त मस्सिल हो कर मुरीद के साथ रहेगी और हर काम में मदद करेगी और उस राह में जो मुश्किल उसे पेश आएगी उस का हल बताएगी।

